सन् 1998 से लगातार प्रकाशित

जहाज मन्दिर

अधिष्ठाता - पूज्य आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

वर्ष : 17 • अंक 9 • 5 दिसम्बर 2020 • मूल्य : 20 रु.

जहाज मंदिर में सूरि मंत्र साधना का दिव्य परिसर

संघवण सौ. श्रीमती प्रेमलता डोसी को हार्दिक श्रद्धांजली

श्रद्धावनत

संघमाता इचरजबाई चंपालालजी डोसी परिवार
संघवी सुगनचंद प्रेमचंद विजयराज
हंसराज–सौ. अरुणा, कुशलराज–सौ. पमिता
प्रियंका, प्राक्षि, भाविक डोसी परिवार
बेटा–पोता–पड़पोता स्व. श्री चंदनमलजी डोसी, खजवाणा–बैंगलोर

आगम मंजूषा

भगवान महावीर

तस्सेण मग्गो गुरु-विद्धसेवा, विवज्जणा बालजणस्स दूरा।
सज्झाय एगंत निसेवणा य, सुत्तत्थसचिंतणया धिती य॥

गुरु और वृद्धों की सेवा करना, अज्ञानी लोगों का दूर से वर्जन करना, स्वाध्याय करना, एकान्त में रहना, सूत्रार्थ का चिंतन करना तथा धैर्य रखना यह मोक्ष प्राप्ति का मार्ग है।

To serve the teacher and old people keep away from the company of ignorant people, to study the scriptures, to meditate on the meaning of Sutras, to remain alone and to be patient-all these constitute the path of Moksha.

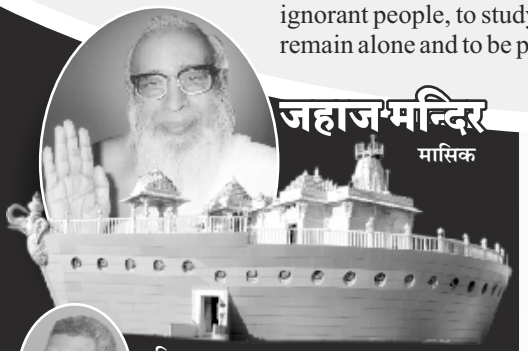

जहाज मन्दिर

मासिक

अधिष्ठाता
खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत
श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

वर्ष : 17 अंक : 9 5 दिसम्बर 2020 मूल्य 20 रू.

प्रधान संपादक :
डॉ. यू.सी. जैन (महामंत्री)

जहाज मन्दिर में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से सम्पादक / प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है

सदस्यता शुल्क

संस्था संरक्षक	:	21,000 रूपये
मानद संरक्षक	:	11,000 रूपये
15 वर्षीय सदस्यता	:	2500 रूपये
12 वर्षीय सदस्यता	:	2000 रूपये
6 वर्षीय सदस्यता	:	1000 रूपये
त्रिवार्षिक सदस्यता	:	500 रूपये
वार्षिक सदस्यता	:	200 रूपये

सदस्यता, विज्ञापन व सहयोग राशि
ICICI की किसी भी शाखा में
SHRI JIN KANTI SAGAR SOORI SMARK TRUST
BANK - ICICI JALORE
ACCOUNT NO. 065301000256
IFSC CODE - ICIC0000653

सम्पर्क सूत्र / प्रकाशक
श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट
जहाज मन्दिर
माण्डवला - 343042, जिला-जालोर (राज.)
फोन : 02973-256107, 256192, 9649640451
E-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www.jahajmandir.com, www.jahajmandir.org

अनुक्रमणिका

1. नवप्रभात	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	04
2. दादावाड़ी दर्शनम् भाग 1	हैदराबाद फीलखाना	05
3. दादावाड़ी दर्शनम् भाग 1	हैदराबाद बैगम बाजार	06
4. सोलह सतियाँ कथानक	मुनि मनितप्रभसागरजी म.	07
5. सूरि मंत्र साधना वर्धापना	मुनि श्रेयांसप्रभसागरजी म.	08
6. सिंघी, सिंघवी गोत्र का इतिहास	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	09
7. ऐसे थे मेरे गुरुदेव	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	10
8. विहार डायरी	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	11
9. अष्टकं गुरु श्रीजिनकान्तिसागरसूरेः	मुनि मलयप्रभसागरजी म.	13
10. अधूरा सपना	डॉ. साध्वी विद्युत्प्रभाश्रीजी म.	14
11. मातृ वत्सल श्रीमती प्रेमलताजी डोसी	डॉ. साध्वी विद्युत्प्रभाश्रीजी म.	17
12. शील तारणहार	मुनि समयप्रभसागरजी म.	20
13. समाचार दर्शन	संकलित	22
14. एक खुशनुमा व्यक्तित्व	मुनि मनितप्रभसागरजी म.	29
15. जटाशंकर	आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.	34

विशिष्ट दिवस

7 दिसंबर आचार्य श्रीजिनकांतिसागरसूरि पुण्यतिथि, जहाज मंदिर मांडवला मेला
10 दिसंबर श्री महावीर स्वामी दीक्षा कल्याणक
11 दिसंबर श्री पद्मप्रभ मोक्ष कल्याणक
13 दिसंबर पाक्षिक प्रतिक्रमण
15 दिसंबर धनार्क, कुमुहूर्त्ता प्रारंभ रात्रि 09.33 से
18 दिसंबर आ. श्री जिनयश:सूरि पुण्यतिथि, पावापुरी
24 दिसंबर श्री अरनाथ जन्म एवं मोक्ष कल्याणक
25 दिसंबर मौन एकादशी, श्री अरनाथ दीक्षा कल्याणक, श्री मल्लिनाथ जन्म-दीक्षा व केवलज्ञान कल्याणक, श्री नमिनाथ केवलज्ञान कल्याणक
28 दिसंबर पाक्षिक प्रतिक्रमण, रोहिणी, श्री सम्भवनाथ जन्मकल्याणक
30 दिसंबर श्री सम्भवनाथ दीक्षा कल्याणक
31 दिस. पुष्य नक्षत्र प्रारंभ शाम 07.48
1 जनवरी पुष्य समाप्त रात्रि 08.14
6 जनवरी आ. श्रीजिनहरिसागरसूरिजी म. पुण्यतिथि, मेड़ता रोड, फलोदी पार्श्वनाथ तीर्थ
8 जनवरी श्री पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक
9 जनवरी श्री पार्श्वनाथ दीक्षा कल्याणक
10 जनवरी श्री चन्द्रप्रभस्वामी जन्म कल्याणक
11 जनवरी श्री चन्द्रप्रभस्वामी दीक्षा कल्याणक
12 जनवरी पाक्षिक प्रतिक्रमण, श्री शीतलनाथ केवलज्ञान कल्याणक, पू. उपाध्याय श्री क्षमाकल्याणजी म. की 204वीं पुण्यतिथि

नवप्रभात

बहुत आसान लगता है दूसरों को समझना!

बहुत मुश्किल लगता है अपने आपको समझना!

जबकि सच यह है कि बहुत मुश्किल है दूसरों को समझना।

बहुत आसान है अपने आपको समझना।

दूसरों को समझना इसलिये मुश्किल है कि वह कभी भी मेरे पास सदा-सदा के लिये नहीं होता। होता भी है तो अधूरेपन के साथ! अपनी पूर्णता लिये कोई भी दूसरा मेरे पास हमेशा नहीं होता।

वह दूसरा कोई व्यक्ति हो, चाहे पदार्थ! हम जब भी उसे जानते हैं, उस समय की उसकी पर्याय को! या वह जो मुझे दिखाना चाहता है, बस वही जान पाते हैं।

जानते हैं उसकी किसी एक पल की गतिविधि को! और हम अपने मन में उसके लिये आग्रह बनाते हैं हमेशा के लिये!

किसी व्यक्ति को गलत कार्य करते देखा तो धारणा बना ली कि वह गलत आदमी है। फिर वह जब भी आंखों के सामने होगा, तुम उसे अपनी पूर्व में संजोयी धारणा के आधार पर ही देखोगे।

हाँलाकि उस व्यक्ति ने उस समय गलत कार्य किया होगा, मगर उसी दिन उसने अन्य बहुत सारे अच्छे कार्य भी किये थे। मगर हमारी धारणा क्षण-परिणामी होती है।

किसी भी व्यक्ति या पदार्थ को उसकी पूर्णता के साथ नहीं जाना जा सकता।

सबसे आसान है- अपने आपको जानना। क्योंकि मैं सदा-सदा मेरे साथ हूँ। मैं अपनी समस्त घटनाओं का पूर्ण रूप से साक्षी रहा हूँ। मैं अपनी गतिविधियों से अपने आपको अलग नहीं कर सकता।

मगर मुश्किल यह है कि जिसे मैं जान नहीं सकता, उसे जानने का सदा प्रयत्न करता हूँ।

जिसे जान सकता हूँ, उसके लिये मेरा प्रयास नहीं है।

और सबसे बडी अचरज भरी सच्चाई यह है कि जो स्वयं को जान लेता है, वह सभी को जान लेता है।

परमात्मा महावीर के वचन इसी सत्य का उद्घाटन कर रहे हैं-

जे एगं जाणइ से सव्वं जाणइ।

जो एक आत्मा को अर्थात् अपने आपको जान लेता है, वह सबको जान लेता है।

दादावाड़ी दर्शनम् भाग 1

मंदिर-दादावाड़ी परिचय - 8

हैदराबाद (फीलखाना)

–मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.
– साध्वी डॉ. नीलांजनाश्रीजी म.सा.

महावीर प्रभु चैत्य है, नगर हैदराबाद।
फीलखान में फीलगुड, कोई न वाद विवाद।।
दत्त कुशल प्रतिमा परम, शोभ रही सुविशाल ।
लोग सैकडों नित यहाँ, पूजन करे रसाल ।।
सभी गच्छ मिलकर यहाँ, करे साधना जोर ।
जय जयकार करो सदा, दादा गुरु सिरमौर ।।

आंध्र प्रदेश की राजधानी हैदराबाद में अनेक जैन मंदिर हैं, जिसमें फीलखाना क्षेत्र का त्रिमंजिला महावीर स्वामी मंदिर देखने योग्य है। इस उपनगर में जैनों के घर लगभग 500 हैं, जिनमें मंदिरमार्गी 400, स्थानकवासी 70 एवं तेरापंथी 30 घर हैं।

आंध्र प्रदेश स्थित हैदराबाद शहर के फीलखाना क्षेत्र में श्री श्वेताम्बर जैन संघ ने वि.सं. 2034 श्रावण सुदी 14 के दिन जिनमंदिर बनाने का काम आरम्भ किया था, जहाँ आज पांच मंज़िल का भव्य धर्मस्थान निर्मित हो चुका है।

अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव 5000 भक्तजनों की उपस्थिति में नौ दिन के महोत्सव के साथ वि.सं. 2046 वैशाख सुदी 6, सोमवार, 30 अप्रैल, 1990 को सम्पन्न हुआ।

मंदिर जी के मुख्य मूलगंभारे में पांच प्रभु प्रतिमाएँ हैं। इसमें मूलनायक के रूप में वर्तमान चौबीसी के चरम तीर्थंकर प्रभु श्री महावीरस्वामी जी की पूर्वमुखी प्रतिमा विराजित है। साथ ही भगवान श्री युगादिदेव प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ, श्री शीतलनाथ भगवान व चंद्रप्रभु जी व श्री गोड़ी पार्श्वनाथ भगवान फनासहित बिराजित है।

मंदिर जी की प्रतिमाओं की पिछवाई में सोना व चांदी का अति सुन्दर कार्य किया हुआ है, जो देखने योग्य है। मंदिर जी के तल माले के हॉल में चांदी का अति सुन्दर भण्डार है व स्वर्ण कार्य से युक्त भैरू जी का कांच फ्रेम युक्त 3 गुणा 4 फीट का विशाल चित्र अति कलात्मक है। प्रभु के दाहिनी ओर दीवार में मणिभद्र जी एवं आगे की तरफ नाकोड़ा भैरू जी की प्रतिमा है। प्रभु जी की बायीं दीवार में चक्रेश्वरी देवी एवं श्री पद्मावती देवी की सुन्दर छतरियाँ हैं। यक्ष-यक्षिणी प्रभु के आगे प्रतिष्ठित हैं। रंगमंडप के मूल गंभारे एवं हाल की छत में कांच का सुन्दर कार्य व स्वर्णयुक्त कार्य अति ही मनोरम एवं कलात्मक है। रंगमंडप के स्तंभ व तोरणों की शिल्पकला भी अनूठी है।

जिन मंदिर के मध्य मंज़िल में श्री गणधर गौतमस्वामी जी का गुरुमंदिर स्थापित है। मूलनायक के बायें अलग-अलग छतरी में श्री जिनदत्तसूरि जी एवं श्री जिनकुशलसूरि जी की श्वेतवर्णीय प्रतिमाएँ विराजमान हैं।

हर पूर्णिमा को दादा गुरुदेव की बड़ी पूजा होती है। ठहरने के लिए यहाँ पर निकटस्थ श्री महावीर भवन है, जिसमें कक्ष एवं रसोई हेतु व्यवस्था है।

मंदिर जी से 2 कि.मी. दूरी पर चारमीनार है, जो हैदराबाद का ऐतिहासिक स्थल है। यहाँ पर भारत सरकार के पुरातत्व विभाग का एक विशिष्ट दर्शनीय संग्रहालय है, जो 1.5 कि.मी. दूरी पर सालारजंग म्यूजियम के नाम से विख्यात है।

पता :

श्री महावीरस्वामी जैन श्वेताम्बर मंदिर,

15-1-494, फीलखाना, हैदराबाद - 500 012 (आंध्र प्रदेश) दूरभाष : 040-24614494

मंदिर-दादावाड़ी परिचय - 9

हैदराबाद (बेगम बाजार)

हैदराबाद शहर के घासमंडी इलाके में परमात्मा पार्श्वनाथ जिनमंदिर में दादा गुरुदेव के 300 वर्ष प्राचीन श्री चरण प्रतिष्ठित हैं। मंदिर का विशाल द्वार है। उस विशाल द्वार के अंदर लम्बा हॉल है, मध्य में पांच जिन प्रतिमाओं से युक्त मंदिर है। मूलनायक श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ के दाहिने बाजू गंभारे के पास भमती में श्री आदिनाथ व बायें बाजू श्री शान्तिनाथ भगवान भक्तों को शान्ति प्रदान करते हैं। मूलनायक गंभारे में भी पांच प्रतिमाओं के अलावा दोनों तरफ तिगड़े में तीन-तीन प्रभु प्रतिमायें हैं जिनमें कुंथुनाथ, पार्श्वनाथ, महावीरस्वामी आदि जिनबिम्ब हैं जो लगभग 9 गुणा 11 ईंच की लम्बाई-चौड़ाई युक्त है।

गंभारे के बाहर हॉल में प्रभु के दाहिने आदिनाथ की प्रतिमा के आगे दो जोड़ी मार्बल की चरण पादुकायें हैं। ये चरण पादुकायें श्री दादा जिनदत्तसूरि व श्री जिनकुशलसूरि की हैं। पादुका का नाप 13 गुणा 9 ईंच है। उन पर कोई शिलालेख नहीं है। गुरु प्रतिमाओं तथा प्रभु प्रतिमाओं का अलग-अलग कलश व शिखर है।

मंदिर के ऊपर पहले माले पर चौमुख जी शंखेश्वर पार्श्वनाथ, वासूपूज्य स्वामी, मुनिसुव्रत स्वामी एवं महावीर स्वामी शिखर में प्रतिष्ठित हैं।

150 वर्ष प्राचीन इस जिनालय में संलग्न एक बड़ा हॉल उपाश्रय का काम करता है। उपाश्रय में प्रवेश करते ही बायीं तरफ अलग कांच के काम की छतरी में गोरा भैरू, दायीं ओर कक्ष में अन्दर सीढ़ियों के नीचे दीवार से लगे गोखले (आले) में सिन्दुरिया भैरू की प्रतिमा है। चूड़ी बाजार, बेगम बाजार के इस क्षेत्र से चारमीनार 2 कि.मी., सालारजंग म्यूजियम व बिरला मंदिर 4 कि.मी. दूरी पर अवस्थित है, जो हैदराबाद के दर्शनीय स्थल हैं।

यह शिखरबद्ध मंदिर अत्यंत चमत्कारिक एवं आकर्षक है। इसके हॉलनुमा उपाश्रय में हस्तलिखित ग्रंथों का विशाल भंडार भी है। रंगमंडप में सुन्दर कोरणी के साथ दादा गुरुदेव के दो बड़े चित्र अंकित हैं।

पता :

श्री जैन श्वेताम्बर चिंतामणि पार्श्वनाथ मंदिर

14-6-333, चूड़ी बाजार, घास मण्डी, बेग़म बाजार, हैदराबाद - 500 012 दूरभाष : 040-2473 8932

सोलह सतियाँ
कथानक
18

विलक्षण वैराग्यवती महासती कौशल्या

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

गतांक से आगे...

पुत्र भरत! तेरे लिये तेरा राज्याभिषेक भले ही महत्त्वपूर्ण न हो पर मेरे लिये जीवन-मरण का प्रश्न बन गया है। प्रदत्त वचन से विपरीत यदि मैं राम का अभिषेक करता हूँ तो इतिहास के कटघरे में मुझे अपराधी की भाँति खड़ा होना पड़ेगा। तुम ही कहो, क्या आने वाले पीढी मुझे चंचलचेता और वचन भंग-दोषी के रूप में रेखांकित नहीं करेगी?

पर पिताजी! बड़े के रहते छोटा भाई पदाभिषिक्त हो, यह अशक्य है। क्या आने वाली पीढ़ी मुझे लोभी के रूप में शब्दांकित नहीं करेगी। संसार यही तो कहेगा कि लालची भरत के राजपाट के लोभ ने सारे परिवार को संकट में डाल दिया। नहीं....नहीं....! भरत भले ही इतना शिष्ट और योग्य न हो कि सूर्यवंश के उज्ज्वल शिखर पर यश-कलश चढा सके पर इतना धृष्ट और अशिष्ट भी नहीं है कि रघुकुल की महिमा को धूमिल कर दे।

भ्रात भरत! तुम व्यर्थ ही चिन्तित हो रहे हो। मेरे रहते यदि तुम्हें राज्याभिषेक अस्वीकार्य है तो महल का त्याग करके मेरा वनवास स्वीकार कर लेना ही श्रेष्ठ है।

राम के वनवास की बात सुनकर क्षणार्ध में माता कौशल्या की आँखें भर आयी। एक पल तो पुत्र-विरह की कल्पना से कांप उठी, तुरन्त अपने हृदय को वज्र की तरह कठोर किया। उसने हर गम को खुशी खुशी झेलने का मानस बना लिया। वास्तव में योगी राम की जन्मदात्री कोई महायोगिनी ही हो सकती है।

पुत्र! मुझे तुमसे यही अपेक्षा थी। मेरी कोंख से जन्म लेकर तूंने मुझे ही नहीं, सम्पूर्ण सूर्यवंश को गौरवान्वित किया है। पितृ वचन के लिये राज्याभिषेक-त्याग और वनवास-स्वीकार का यह अनूठा कदम राम का ही नहीं, सम्पूर्ण रघुकुल का अनूठा दस्तावेज बन गया है। तूंने एक बार फिर अपनी निर्लिप्तता और श्रेष्ठता अंकित की है। कौशल्या विरक्त महासती की तरह कह गयी।

माँ! यह सब तुम्हारा ही दिया हुआ है। मातृ-पितृ भक्ति का यह एक छोटा-सा नमूना है। आपके उपकारों के बदले यदि अपनी चमड़ी के जूते बनाकर पहनाऊँ अथवा कंधों पर बिठाकर तीर्थयात्रा करवाऊं तो भी उऋण थोड़े ही ना हो सकूंगा।

विदायी के क्षणों में वह इतना ही कह पायी-शिवास्ते पंथानः सन्तु ।

देखते-देखते राम के कदम वन की ओर बढ़ गये। लक्ष्मण और सीता ने राम के चरणों का अनुगमन किया।

भरत के राज्याभिषेक के पश्चात् महाराज दशरथ पूर्व निर्णयानुसार प्रव्रजित हुए। कौशल्या ने भी महापथ की पथिक बनना चाहा। पर भरत ने उन्हें रोका-माँ! तीव्र आघात के इन क्षणों में तुम नहीं जानती कि मैं अन्तर से कितना व्यथित-पीड़ित हूँ। इस समय मेरा मन जब करूण रूदन कर रहा है, जब तुम्हारे संबल और स्नेह की मुझे परमावश्यकता है, तब तुम ही यों निराधार करके जा रही हो।

और फिर इससे मैं लोक में निंदा और अपशय का पात्र नहीं बन जाऊंगा। लोग नहीं कहेंगे कि पिता, माता, भाई, भाभी, सभी को घर से बहिष्कृत करके भरत स्वयं अयोध्या का अधिपति बन बैठा है।

माते! तुम तो मेरी आदर्श हो! मैं जानता हूँ, माँ कैकयी ने तुम्हारे साथ दुर्व्यवहार किया है पर तुम तो क्षमा और समता की प्रतिमा हो। तुममें हमने सदा से त्याग की खुश्बू देखी है।

पुत्र भरत! मेरा संयम का मनोभाव अन्तर्प्रेरित है। उसमें कैकयी का व्यवहार तनिक भी कारणभूत नहीं है। घटित इस सारे घटनाक्रम में मैं किसी को भी उत्तरदायी नहीं ठहराती। सारा खेल नियति का है। अपराधी न तो कैकयी है, न तूं। तूं स्वस्थ मन से नीतिपूर्वक राज्य कर और मुझे संयम की अनुमति दे।

नहीं....नहीं....माँ! तुम्हारा विरह मेरे लिये असह्य है। क्या मैं तुम्हारा पुत्र नहीं। क्या तुम्हें मुझ पर प्रेम नहीं। मेरी

भावना की खातिर ही रूक जाओ माँ। कहते हुए भरत कौशल्या के चरणों में गिर पड़ा। आँखें सजल हो गयी।

सहसा कौशल्या की आँखें बन्द हो गयी। पल भर सोचने के बाद नयन खुले-भरत! मैं तुझमें और राम में कोई भेद नहीं देखती। मेरे लिये जैसा राम है, वैसा ही तूं है। आज तक मैंने राम की किसी भावना को नहीं तोड़ा, फिर तेरा दिल कैसे तोड़ सकती हूँ।

राम के चौदह वर्ष के वनवास से पुनरागमन तक मैं अपना निर्णय स्थगित करती हूँ। मैं घर में संन्यास को जीने की कोशिश करूँगी।

कौशल्या के परिवर्तित निर्णय ने एक बार फिर भरत को चमत्कृत कर दिया। कैसी योगिनी है मेरी माँ कौशल्या जो संसार में ही सन्यस्त और घर में ही अणगार बन जाती है। भरत के श्रद्धाश्रुओं से कौशल्या के चरणों का अभिषेक हो गया।

वनवास की अवधिपूर्ण होने पर राम का अयोध्या में पुनरागमन होता है। राम का राज्याभिषेक होता है। कौशल्या को पाकर राजमाता का पद धन-धन्य बन जाता है।

वैराग्यवती कौशल्या को महलों के सुखों में कोई रस नहीं रहता है! अन्त में दीक्षित होकर स्वर्गगामिनी हो जाती है।

अपराजिता निश्चित ही अपराजिता है। कभी पिता के पराजय का भार अयोध्या की महारानी बनकर उतारती है तो कभी राम को वनवास की आज्ञा दे स्वयं महलों में वनवासिनी बन जाती है। कभी प्रेम, स्नेह और उदारता से कैकयी के मन को जीत लेती है तो कभी अपनी त्याग निष्ठा और निस्पृहवृत्ति से भरत के मन में वह स्थान बना लेती है, जो स्थान जन्म देकर भी कैकयी नहीं बना पाती है।

साहस और समता, संकल्प और साधना की अप्रतिममूर्ति कौशल्या का नाम इतिहास के पन्नों पर आज भी अपनी सम्पूर्ण चमक-दमक के साथ अंकित है।

(क्रमशः)

गीत गाता चल-1

सूरि मंत्र साधना वर्धापना

—मुनि श्रेयांसप्रभसागरजी म.

(ओ माँ, तूं कितनी अच्छी है)

गुरुदेवऽऽऽ गुरुदेव, गुरुदेवऽऽऽ गुरुदेव ।।
तेरे बेटे हम, तेरे चेले हम,
याद करे तुझको...
गुरुदेवऽऽऽ गुरुदेव, गुरुदेवऽऽऽ गुरुदेव ।।
काला टिका जो सबके माथे पर-2
हम भी चाहे वो...
गुरुदेवऽऽऽ गुरुदेव, गुरुदेवऽऽऽ गुरुदेव ।।
देते बधाई मिलकर सब हम-2
पूर्ण हुआ है जाप वो तेरा मौन-तपस्या पूर्वक
धन्य है मेरा मन, धन्य है ये जीवन
तुझको पाकर के...
गुरुदेवऽऽऽ गुरुदेव, गुरुदेवऽऽऽ गुरुदेव ।।
याद हमें आती है तेरी-2
दूर रखा है हमको गुरुवर खामी क्या है हमारी
तेरी आज्ञा को हर पल पालेंगे
पास बुलालो ना...
गुरुदेवऽऽऽ गुरुदेव, गुरुदेवऽऽऽ गुरुदेव ।।
अब ना शक्ति हम में रही है-2
सह ना पाएंगे गुरुवर हम तेरी जुदाई बडी है
मुक्ति मनीषप्रभ विरक्त मलय नेमि
समय बुलावे तुझे...
गुरुदेवऽऽऽ गुरुदेव, गुरुदेवऽऽऽ गुरुदेव ।।

गोत्र का इतिहास
26

सिंघी, सिंघवी गोत्र का इतिहास

आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

इस गोत्र के इतिहास का प्रारंभ आचार्य श्री जिनवल्लभसूरि से हुआ है। प्रथम दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरि उन्हीं के पट्ट पर बिराजमान हुए थे। यह घटना वि. सं. 1164 की है। आचार्यश्री विहार करते हुए सिरोही पधारे। उस दिन ननवाणा बोहरा परिवार के देवजी के पुत्र को सर्प ने काट खाया था। आचार्य श्री जिनवल्लभसूरि द्वारा नवकार महामंत्र से अभिमंत्रित जल के छिड़काव करने पर वह बालक जहर से सर्वथा मुक्त हो गया।

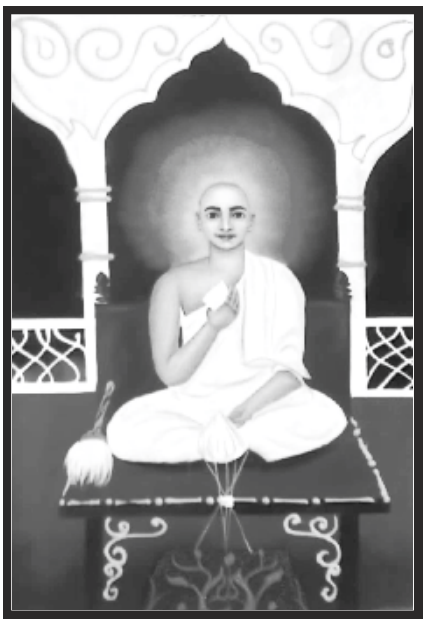

आचार्यश्री के इस चमत्कार से तथा उनके प्रभावशाली आत्महितकारी देशना से प्रभावित होकर ननवाणा बोहरा परिवार के श्री आसानंदजी के पुत्र विजयानंदजी ने जैन धर्म स्वीकार कर लिया।

वे सभी ननवाणा बोहरा ही कहलाते थे। उनकी 16वीं पीढी के बाद श्रीधर के पुत्र सोनपाल ने वि. सं. 1484 में शत्रुंजय का छह री पालित संघ का आयोजन किया। परिणाम स्वरूप इनके वंशज सिंघवी, सिंघी कहलाने लगे।

सोनपालजी के सिंहाजी, जसाजी, राणोजी, भगाजी, सदाजी और जोगाजी इस प्रकार छह पुत्र हुए। इनमें से तीन का परिवार जोधपुर में तथा शेष भ्राताओं का परिवार गुजरात में बस गया।

ओसवाल जाति के इतिहास में लिखा है कि सिंहाजी के पांच पुत्र हुए। इनसे सिंघवी गोत्र में कई शाखाऐं निकली। भीमराजोत, धनराजोत, गाढमलोत, महादसोत, बागमलोत, सुखमलोत, रायमलोत, परतापमलोत, जोरावरमलोत, मूलचंदोत, हरचंदोत, भागमलोत, पारसोत आदि सिंघवी गोत्र की शाखाऐं हैं।

इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों में सिंघवी कुल के नरवीरों के नाम विशेष बहुमान के साथ अंकित हैं। उन्होंने शासन में अपनी रणकुशलता, राजनीतिक पटुता और स्वामिभक्ति की अमिट छाप छोडी है। सिंघवी इन्द्रराज सिंघवी के कार्यकुशलता के परिणाम स्वरूप जोधपुर के महाराजा मानसिंहजी ने कहा–

आज सूं थारो दियोडो राज है, म्हारे राठोरों रो वंश रेसी ने ओ राज करसी उआ थांरा घरसुं एहसान वंद रेसी।

इसी सिंघवी गोत्र से नवलखा, फसला आदि शाखाऐं भी निकली।

मूता नैणसी द्वारा लिखित 'मारवाड रे परगनारी विगत' नामक पुस्तक के अनुसार जोधपुर में स्थित सिंघियों के चौक के श्री पार्श्वनाथ प्रभु के मंदिर का निर्माण सिंघवी परिवार द्वारा वि. सं. 1516 में राव जोधाजी के समय करवाया गया था। उसे वि. सं. 1737 में इस मंदिर को जब नवाब नाहरवेग ने तोड़ दिया, तब सिंघवी पदमा पारसोत ने इसका पुनः निर्माण करवाया।

जालोर जिले के भांडवपुर तीर्थ का जिन मंदिर सिंघवी गोत्र वालों द्वारा ही बनाया गया है। सुजानगढ़ का सुप्रसिद्ध जिन मंदिर श्री पन्नेचंदजी सिंघी परिवार द्वारा बनाया गया है। पूज्य गुरुदेव शासन प्रभावक प्रज्ञापुरुष आचार्य भगवंत श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. सिंघी गोत्र के थे।

गुरु स्मृति
70

ऐसे थे मेरे गुरुदेव

– आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

चेन्नई नगर के सन् 1957 के ऐतिहासिक चातुर्मास की संपन्नता के पश्चात् दक्षिण प्रान्त के कोयमतूर आदि नगरों की ओर पूज्य गुरुदेवश्री ने विहार किया। कोयमतूर, कोचीन, कलिकट होते हुए मैसूर पधारे। सभी नगरों में एक-एक सप्ताह की स्थिरता रही। इन नगरों में पहली बार ऐसे जैन साधु पधारे थे, जिनके प्रवचन सार्वजनिक होते थे। इन प्रवचनों में जैन अजैन सभी बडी संख्या में उपस्थित रहकर जैन धर्म की विशिष्टताओं का अनुभव करते थे।

मैसूर में ही पूज्यश्री की पावन निश्रा में परमात्मा महावीर का जन्म कल्याणक महोत्सव मनाया गया। इस दिन रंगचारलू मेमोरियल हॉल में हुई विशाल सभा की अध्यक्षता मैसूर के सेशन जज श्री के.बी. गुब्बे ने की थी।

इस आयोजन के पश्चात् पूज्यश्री विहार कर नीलगिरि पधारे। अतिशीतल इस क्षेत्र में पूज्यश्री ने ऊटी, कोतगिरि आदि क्षेत्रों में प्रवास किया।

चातुर्मास के लिये अलग-अलग नगरों की विनंतियाँ चल रही थी। पूज्यश्री ने मैसूर संघ के अत्याग्रह को स्वीकार कर मैसूर में चातुर्मास करने की स्वीकृति प्रदान की। नीलगिरि के रमणीय वातावरण को अपनी साधना के अनुकूल पाकर महिने भर यहीं रुके।

चातुर्मास हेतु वि. सं. 2015 आषाढ शुक्ल 4 को शुभ मुहूर्त में पूज्यश्री ने मैसूर नगर में मंगल प्रवेश किया। श्री संघ ने विनंती की कि इस वर्ष हमें आपश्री के श्रीमुख से भगवती सूत्र श्रवण करना है। साथ ही जैन रामायण का भी बोध प्राप्त करना है। पूज्यश्री ने श्रीसंघ के आग्रह को स्वीकार किया। श्री भगवती सूत्र निमित्त श्रावण वदि 1 बुधवार को रात्रि जागरण का आयोजन हुआ तथा श्रावण वदि 2 गुरुवार को विशाल शोभायात्रा निकाली गई। दूज से सूत्रों में भगवती सूत्र पर तथा भावनाधिकार में जैन रामायण पर पूज्यश्री के आत्म-लक्षी प्रवचन प्रारंभ हुए।

मैसूर वालों ने अपना सौभाग्य माना कि इस वर्ष दो श्रावण होने से हमें पाँच महिने के चातुर्मास में क्रान्तिकारी प्रवचन श्रवण करने का लाभ मिल रहा है।

इस चातुर्मास में तपस्या भी जोरदार हुई। प्रथम श्रावण सुदि 11 से नवरंगी तपस्या प्रारंभ हुई। द्वितीय श्रावण वदि 4 को तपस्या का भव्य वरघोडा आयोजित हुआ। पंचमी को पारणे संपन्न हुए।

मैसूर के इस चातुर्मास में पूज्यश्री को अनुकूल व प्रतिकूल दोनों प्रकार की परिस्थितियों का अनुभव हुआ। पूज्यश्री ने इस चातुर्मास की हमारे साथ चर्चा करते हुए बताया था कि जीवन की पहली ऐसी अनुभूति रही जिसमें हमें नये दृश्य देखने को मिले।

मैसूर नगर के बाह्य सौन्दर्य को देखने तो देशी विदेशी लोग बडी संख्या में आते ही थे। हमने मैसूर के श्रावकों का आत्मीय आन्तरिक श्रद्धा भरा सौन्दर्य अनुभव किया था।

(शेष पृष्ठ 33 पर)

विहार डायरी 119

विहार डायरी

आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

श्री सिद्धाचल की पावन भूमि को भावभरी वंदनाऐं समर्पित करके 9 फरवरी 2003 को ही बडौदा के लिये विहार कर दिया। दिन कम थे, रास्ता लम्बा था। नूतन दीक्षित मुनि साथ थे। 20 फरवरी को बडौदा नगर में प्रवेश रखा था। लगभग 240 किलोमीटर का लम्बा विहार था। और दिन हमारे पास केवल 11 थे।

वहाँ दीक्षा निमित्त कार्यक्रम का प्रारंभ 18 फरवरी से ही हो गया था। दीक्षा का शुभ मुहूर्त्त 22 फरवरी 2003 को था।

हमने अयोध्यापुरम्, धोलेरा, तारापुर होते हुए बडौदा नगर में प्रवेश किया। 21 को वरघोडा और 22 को दीक्षा समारोह था। ता. 21 फरवरी को रात्रि में अभिनंदन समारोह रखा था जिसका संचालन बारडोली के सुप्रसिद्ध सुश्रावक श्री दीपकभाई ने किया था। दूसरे दिन सुबह लोगों ने बताया था कि समारोह का आनंद अद्‌भुत था। दीपक भाई ने जो परमात्म-भक्ति कराई, बहुत बहुत अनुमोदनीय थी। विद्युत् प्रकाश को वर्जित किया गया था। चारों ओर दीपकों की रोशनी थी। दीपकों के मद्धिम और सुहावने प्रकाश में भक्ति की बहार चित्त को पूर्ण एकाग्र कर रही थी। रात्रि का कार्यक्रम होने से हम वहाँ उपस्थित नहीं थे। पर समारोह के वातावरण की चर्चा ने चित्त को अनुमोदना से भर दिया था।

उच्च शिक्षा प्राप्त कुमारी भाविता पारेख श्री शांतिलालजी पारेख की पौत्री एवं श्रीमती पूर्णिमाबेन व श्री नरेशकुमारजी पारेख की पुत्री है। श्री शांतिलालजी पारख गच्छ के आगेवान सुश्रावक थे। पालीताना में श्री जिन हरि विहार के निर्माण में उनका पूरा योगदान रहा है। अभी तो हरि विहार का पूरा स्वरूप बदल गया। पुराना जो स्वरूप था, उसका निर्माण इन्हीं की देखरेख में संपन्न हुआ था। जब से हरि विहार ट्रस्ट बना था, तब से लगातार वर्षों तक महामंत्री के पद पर रहकर उन्होंने अपनी सेवाऐं अर्पण की थी। धोलका दादावाडी के निर्माण में भी उनका पूरा योगदान रहा था।

कुमारी भाविता के साथ एक और बहिन नीतूजी चौरडिया बिजयनगर निवासी की दीक्षा हो रही थी। दीक्षा का वातावरण बहुत ही अद्‌भुत था। पूरा बडौदा नगर उमड पडा था।

बडौदा प्रवास हमारा लम्बा रहा। क्योंकि पालीताना और यहाँ के नवदीक्षितों की बडी दीक्षा यहीं रखी थी। प्रतिदिन प्रवचनों का आयोजन रहा। खरतरगच्छ के साधुओं का इतना लम्बा प्रवास प्रायः पहली बार या वर्षों बाद हो रहा था। 10 मार्च को बडी दीक्षा करवाने के पश्चात् 12 मार्च को हमारा विहार अहमदाबाद की ओर हुआ। ता. 17 मार्च 2003 को मेरी उम्र के 43 वर्ष पूर्ण होने जा रहे थे। संघ ने इस उपलक्ष्य में प्रवचन सभा का विशेष आयोजन किया था, जो कि मेरी दृष्टि से मेरे लिये चिंतन का अवसर था।

लोग मेरे लिये क्या कह रहे थे, वह महत्त्वपूर्ण नहीं था। मैं उसे किन भावों से सुन रहा था, वह महत्त्वपूर्ण था। मेरे बीते जीवन को लोग किस दृष्टि से देख रहे थे, वह महत्त्वपूर्ण नहीं था। मैं स्वयं अपने बारे में क्या सोच रहा था, वह महत्त्वपूर्ण था। इसलिये आज का दिन मेरे लिये चिंतन और चिंता का अवसर था। न्यायाधीश श्री गुमानमलजी सा. लोढा, डॉ. जितेन्द्रभाई बी. शाह के वक्तव्य मेरे लिये प्रेरणादायी थे।

लगभग 10 दिनों के प्रवास के पश्चात् हमारा विहार खानदेश की ओर हो रहा था। गुरुदेवश्री के श्रीमुख से खानदेश के संघों की भक्ति, प्रेम, धर्म-निष्ठा आदि की चर्चाऐं बहुत बार सुनी थी। हमारा विहार पहली बार हो रहा था।

अहमदाबाद से बडौदा होते हुए हमने डभोई तीर्थ की ओर कदम बढाये थे। लोढण पार्श्वनाथ परमात्मा की अद्‌भुत श्यामवर्णी प्रतिमा जो मंदिरजी के नीचे भोंयरे में बिराजित है, के दर्शन कर रोम-रोम तृप्ति का अनुभव कर रहा था। डभोई गांव में जैन संघ का प्रायः एक भी घर ऐसा नहीं होगा, जिस घर से दीक्षा न हुई हो। वैराग्य के वातावरण से परिपूर्ण श्रीसंघ!

हम जिस दिन पहुँचे, उस दिन चतुर्दशी थी। पाक्षिक प्रतिक्रमण हम प्रारंभ करने जा ही रहे थे कि प्रतिक्रमण करने के लिये बडी संख्या में श्रावक गण आ गये।

उन्होंने निवेदन किया कि हम आपश्री के साथ ही प्रतिक्रमण करना चाहते हैं।

हमने कहा- हम करा देंगे। हम खरतरगच्छ के हैं। हमारी सामाचारी प्राचीन है। चैत्यवंदन जयतिहुअण० का बोला जाता है, स्तुति द्रें द्रें कि० बोलते हैं। फिर अजितशांति स्तवन के बाद थोडा अन्तर आता है।

मैं उस समय सुखद आश्चर्य से भर गया, जब श्रावकों ने कहा- गुरुवर! आज हम आपकी निश्रा में ही प्रतिक्रमण करेंगे। आप जैसा जो करायेंगे, वैसा करेंगे।

अजितशांति के पश्चात् 4 लोगस्स के कायोत्सर्ग तक प्रतिक्रमण साथ करने के पश्चात् हमने उनको आगे प्रतिक्रमण करने का आदेश दे दिया ताकि वे संसारदावा की सज्झाय और कायोत्सर्ग पूर्वक शांति का पाठ कर सके।

गच्छीय उदारता के इस अनूठे उदाहरण से हृदय जिनशासन के प्रति अहोभाव से परिपूर्ण हो उठा।

प्रातः राजपीपला की ओर विहार किया। यहाँ से जंगल का प्रारंभ हो रहा था। राजपीपला के बाद पहाडी रास्ता था। गर्मी के वातावरण में ठंडक का अहसास इस विहार पथ में हो रहा था। क्योंकि चारों ओर हरियाली ही हरियाली थी।

सडक के उतार चढाव लम्बे थे। वाहन बहुत कम थे। लोगों ने कहा था- इस जंगल में पशुओं का भय है। अतः विहार सावधानी से कर रहे थे। सूर्योदय के पश्चात् ही चलना प्रारंभ होता और सूर्यास्त से बहुत पहले प्रवास-वसति की गवेषणा हो जाती।

क्रमशः

(शेष पृष्ठ 13 का)

अष्टकं गुरुश्रीजिनकान्तिसागरसूरेः

मयि कृपां मलये किल वर्षतु, खरतरप्रगतिं कुरु भो गुरो !
गुरुवरीयसुनामपि कष्टहृद्, मुनिपकान्तिगुरो! बत रक्ष माम् ॥८॥

भावार्थ- अंत में आपसे यही विनंती करता हूँ कि आप अपने गच्छ व समुदाय की दिनदुगनी रातचौगुनी प्रगति करावे। वैसे तो गुरुदेव आपका नाम ही कष्टों को हरण करने वाला है, तो भी मैं अपने मन के संतोष के लिए आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप हमेशा मेरी रक्षा करे और मुझ 'मलयप्रभसागर' पर कृपावृष्टि करते रहे।

॥प्रशस्ति॥

(अनुष्टुब्वृत्तेन)

स्वर्गारोहणवर्षे हि, पञ्चत्रिंशे गुरोस्तव ।
अश्रुपूरितनेत्रोऽहं, श्रद्धाञ्जलिं ददाम्यहम् ॥
स्वीकरोतु मनोपुष्प-मष्टकं गुणसूचकम् ।
समर्पयामि पदोस्ते, मणिगुरुकृपाफलम् ॥

भावार्थ- हे गुरुदेव! भीगी आँखों वाला मैं आपको आपके 35वें स्वर्गारोहण वर्ष पर श्रद्धांजलि देता हूँ और आपके चरणों में मणिगुरु की कृपा का फलस्वरूप और आपके गुणों को सूचित करता यह अष्टक समर्पित करता हूँ। आप कृपा कर इसे स्वीकारें।

पादलिप्तनगर्याम् 11/11/2020

गुरु स्मृति

अष्टकं गुरुश्रीजिनकान्तिसागरसूरेः

(द्रुतविलम्बित-छन्दसा)

रचयिता– मुनिः मलयप्रभसागरः

रतनदुर्गसुजातगुरुः खलु, गृहपमुक्तिमलस्य सुपुत्रकः ।
मणिगुरोर्गुरुकान्तिसुकान्तिकः, शरणमस्तु सदा तव मे प्रभो ॥१॥

भावार्थ– रतनगढ़ गाँव में जन्मे, पिताश्री मुक्तिमलजी के सुपुत्र और मेरे गुरु श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.सा. के गुरु ऐसे कान्तिमान् श्रीजिनकान्तिसागरसूरिजी म.सा. आपकी शरण मुझे सदा-सदा हो।

वसुरसग्रहभूमिमितेऽब्दके, सकलभव्यहिताय च वैक्रमे ।
वसुधरापि तु नृत्यपरा यदा, तव बभूव सुजन्म गुरोस्तदा ॥२॥

भावार्थ– पृथ्वी भी जब भावोल्लास में आकर नृत्य करने को तत्पर थी तब सभी भव्यजनों के आत्मकल्याण के लिए सेतु-स्वरूप आपका जन्म विक्रम संवत् 1968 में हुआ था।

जिनहरे र्यतिपस्य गुरोरसौ, चरणपङ्कजभृङ्गसमो हि च ।
कुशलसूरिगुरो र्वरसेवको, गतभयो जयताद् भुवि भास्करः ॥३॥

भावार्थ– श्री जिनकुशलसूरि गुरुदेव के परम उपासक, पूज्य गुरुदेव श्री जिनहरिसागरसूरिजी म.सा. के चरण कमल के भ्रमर समान, पृथ्वी मण्डल में सूर्य के समान तेजस्वी और समस्त भयों से मुक्त ऐसे गुरुदेव आपकी जय हो।

जिनपशासनवृद्धिचिकीर्षुकं, सकलसिद्धिसुबुद्धिसुसंपदम् ।
प्रवचने कुशलं गणपं सदा, खरतरे गगने शशिवन्नुवे ॥४॥

भावार्थ– तीर्थंकर के शासन की वृद्धि करने की इच्छा वाले, ऋद्धि-सिद्धि-बुद्धि रूपी संपत्तिओं के मालिक, खरतर-गगन में चन्द्र के समान शोभने वाले ऐसे प्रवचन-प्रभावक मुनीन्द्र गुरु भगवन्त आपको मैं नमन करता हूँ।

विगतदुःखमुनीन्द्रजितेन्द्रियं, सकलशास्त्ररहस्यसुवेदिनम् ।
अमलकीर्तिधनिव्रतिनं स्तुवे, सततनिर्मलभावसुधारिणम् ॥५॥

भावार्थ– आगम-गीता-कुरानादि जैन-जैनेतर सभी शास्त्रों के रहस्य को जानने वाले, हमेशा अपने हृदय में निर्मल भाव को धारण करने वाले, चिहुं दिशि में व्याप्त स्वच्छकीर्ति के धनी, सदा-सदा प्रसन्न रहने वाले और समस्त इन्द्रियों रूपी शत्रु पर विजय प्राप्त करने वाले ऐसे सूरिप्रवर मैं आपकी स्तुति करता हूँ।

नरगणैरभिनन्दितपादक ! धवलशुद्धसुविस्तृतनामक !
अपरुषप्रकृते! क्षतकाम! हे, वदनपद्म! सुधीः! धर मे नतिम् ॥६॥

भावार्थ– भक्तसमूह के द्वारा अभिनन्दित है चरणकमल जिनके, सारे जग में नाम फैला हैं जिनका, शुद्ध ब्रह्मचर्य का पालन कर जिन्होंने कामदेव को हरा दिया, सद्विचारक और कमल की तरह सौम्य मुख वाले ऐसे सरलस्वभावी हे गुरुदेव! मेरा वन्दन स्वीकारो।

निधिमदाङ्कशरद्मित-वैक्रमे, खलु यतिव्रतमङ्ग गृहीतवान् ।
नगरमाण्डवलाभुवि स्वर्गतः, करयुगाम्बरनेत्रयुतेऽब्दके ॥७॥

भावार्थ– गुरुदेवश्री ने दीक्षा विक्रम संवत् 1989 में ली थी और संवत् 2042 में माण्डवला की भूमि पर देवलोक पधार गए थे।

(शेष पृष्ठ 12 पर)

धारावाहिक
कथा
15

अधूरा सपना

प्रमोद गुरु चरणरज डॉ. साध्वी विद्युत्प्रभाश्री जी म.

(गतांक से आगे)

युवरानी की गिरने की आवाज सुनते ही दास-दासियाँ दौडी आयी। उन्होंने ठण्डे पानी के छींटे डाले। युवरानी होश में आई। वह धीरे-धीरे चलकर महारानी के कक्ष में आयी। उनकी गोद में मुँह छिपाकर धीरे-धीरे सिसकने लगी। युवरानी की स्थिति देखकर महारानी को अपनी पीड़ा पीनी पड़ी।

उन्होंने धीरे-धीरे युवरानी को थपथपाते हुए शांत किया। युवरानी ने सुबकते हुए कहा- परंतु कल रात्रि में तो युवराज कहीं नहीं गये। वे मेरे साथ उपवन में ही थे। उन्होंने यह अपराध नहीं किया।

महाराज ने दर्दभरी आवाज में कहा- काश! ऐसा होता! जो प्रमाण मिले हैं, वे चीख-चीखकर युवराज को दोषित मान रहे हैं। उपवन में तुम्हें ले जाना और वहाँ रहना सब कुछ उसकी योजना का ही एक हिस्सा था। फिर भी परमात्मा से प्रार्थना करो कि हम इस विकट स्थिति से उबर जाये। जिस स्थिति से मैं जूझ रहा हूँ, परमात्मा ऐसी खराब स्थिति किसी को न दे। एक पिता द्वारा पुत्र को कैद... कहते-कहते राजा रो पडे।

स्थिति अत्यन्त नाजुक हो गयी। तीनों सदस्य पीडित थे। रिश्ते अलग थे पर पीड़ा तो सभी की युवराज से जुडी थी। भावों का घोडा सारी सीमाएं तोडकर अनंत आकाश में तैर रहा था। समस्याएँ हजार थी, पर समाधान कहीं नहीं था।

महारानी ने ही मौन तोडा। अब क्या होगा? युवराज मुक्त कब होंगे? महारानी ने पूछ तो लिया पर उत्तर की कल्पना से ही उसका मन सिहर उठा। कहीं... । नहीं...। नहीं..। न्याय इतना क्रूर नहीं हो सकता। जरूर माँ की ममता अवरोध बनेगी। युवरानी का सतीत्व युवराज की अवश्य रक्षा करेगा।

महाराज ने धीरे से चेहरा उठाते हुए कहा- कल न्यायाधिकारी जो निर्णय करेंगे, वही होगा। कक्ष में पुनः वही डरावना सन्नाटा पसर गया।

इतने में एक दासी ने प्रवेश करते हुए कहा- भोजन की सारी तैयारी हो गयी है। आप शीघ्र पधारे एवं भोजन ग्रहण करें।

महाराज ने महारानी की आँखों में झांका, वहाँ भोजन की कामना कम पुत्र की चिन्ता अधिक तैर रही थी। स्वयं राजा की भी भोजन की इच्छा समाप्त हो गयी थी पर अब खुद के लिए भोजन कहाँ करना था बल्कि यह सोचकर भोजन की थाली पर पहुंचना था कि मैं नहीं खाऊंगा तो वह भी नहीं खायेगी।

महाराज ही सबसे पहले खड़े हुए। उन्होंने महारानी से कहा- मैं जानता हूँ, खाने का मन किसी का भी नहीं है पर हमें एक बार अन्नदेवता का सम्मान करने के लिए भोजन के सामने जाना अवश्य चाहिए।

महाराज का संकेत समझकर महारानी ने युवरानी को आग्रह पूर्वक कहा- पीडित हम सभी हैं पर जितना भी मन हो ले लेना चाहिए ताकि सभी का इंजतार खत्म हो।

न चाहते हुए भी बड़ों के आदेश से युवरानी को उठना पड़ा। तीनों पॉव घसीटते हुए भोजन कक्ष में आये। ज्योंहि भोजन की थाली में हाथ डाला, युवरानी का धैर्य चूक गया। वह महारानी की गोद में मुँह छिपाकर रो पड़ी। महारानी ने युवरानी को अपने सीने से चिपकाकर थपथपाया। बेटा! हमें देखकर तुम्हें अपनी पीडा भूलनी होगी। हमारी सोचो कि हम पर क्या बीत रही है?

जैसे-तैसे कुछ मुँह झुठा करके तीनों उठ गये। युवरानी

ने कहा- अगर आप अनुमति दें तो मैं मेरे कक्ष में जाऊँ। अनुमति पाकर युवरानी अपने कक्ष में एवं महाराजा महारानी के साथ अपने कक्ष में आ गये।

दूसरे दिन नियत समय पर राजसभा प्रारंभ हुई। आज तो जैसे जनता का रैला ही उमड़ पड़ा था। पूरे गांव में यह सूचना हवा के साथ प्रचारित हो गयी कि आज युवराज का न्याय होगा।

ढिंपुरी में तो जितने मुँह उतनी बातें। चार लोग एकत्र हुए कि युवराज की चर्चा शुरु। कोई वृद्धत्व की ओर अग्रसर महाराज और महारानी की मानसिक वेदना की चर्चा करते तो कोई युवराज की कुसंगति के कारण उपजे चोरी जैसे निम्न कोटि के अपराध की। रक्षक ही अगर भक्षक हो जाते हैं तो उस माल का बचाव कैसे संभव है! युवराज ही तो इस राज्य के भाग्य है। अगर वे ही प्रजा को सुरक्षा देने की अपेक्षा हडपने का काम करने लगे तो प्रजा किसकी शरण में जाकर गुहार लगायेगी। आज तो राज्यसभा में हमारे न्याय परायण महाराज की भयंकर कसौटी है। देखते है सिंहासन पर बैठने के बाद भी उनका पितृ पद राजपद पर भारी पड़ता है अथवा राजपद पितृपद पर भारी पड़ता है।

जिसने आज तक कभी राजसभा नहीं देखी थी, वह भी उत्सुकता से जानने सुनने के लिये राज सभा में पहुंच गया था। राजाज्ञा से महामंत्री ने राजसभा की कार्यवाही प्रारंभ की। सामान्य छोटी-छोटी बातों के बाद सैनिकों के पहरे में कल के युवराज और आज के अपराधी पुष्पचूल को उपस्थित किया गया।

पिता ने अपने पुत्र को देखने के लिए आंखें उपर उठायी। राजा देखना चाहता था कि पूरे आठ प्रहर बंदी की स्थिति में रहकर युवराज का चेहरा ग्लानि से व्यथित हुआ है अथवा आँखों में बेशर्मी बढ़ी है। राजा यह देखकर अत्यधिक निराश हुआ कि उनके पुत्र की आँखों में न पश्चाताप है न पीड़ा, बल्कि अपने किये पर जैसे गौरव है।

तभी महामंत्री ने महाराज से आज्ञा लेकर कहना प्रारंभ किया- कल रात्रि में नगरसेठ के घर चोरी के इरादे से चोरों ने प्रवेश किया था पर यंत्र व्यवस्था के कारण घर में घंट बज गये और चोरों को भागना पड़ा। भागते हुए चोर की मोजडी मिल गयी। एक तीक्ष्ण धार वाला हथियार भी वहाँ प्राप्त हुआ। चोर का एक साथी भी पकड़ में आ गया है। मोजड़ी के संबंध में जब मोची से पूछा तो उसने कहा- कुछ समय पहले युवराज के कहने से मैंने ही यह मोजड़ी बनायी थी। नगरसेठ के घर से चोरी हुआ सामान भी युवराज के कक्ष से प्राप्त हुआ है। न्याय मंडली से निवेदन है कि वे प्रत्येक दृष्टिकोण से इस घटना की जांच करके न्याय करें।

सभी की नजरें अब न्याय प्रमुखों पर स्थिर हो गयी। सभी की उत्सुकता हर पल के साथ तीव्र हो रही थी कि आज ये न्याय-विशारद अपना न्याय कैसे देंगे? सभा में कानाफुसी भी शुरु हो गयी।

न्याय प्रमुख ने पुष्पचूल से कहा- सारे साक्ष्य आपके विरुद्ध है। फिर भी आप अपने पक्ष में जो भी कहना चाहे तो न्यायप्रक्रिया आपको अवसर प्रदान करती है। युवराज ने सुना जरूर पर उसने प्रत्युत्तर देने की आवश्यकता नहीं समझी। पुनः दुबारा वही प्रश्न दोहराया गया फिर भी युवराज ने अपनी चुप्पी नहीं तोडी।

उसके साथी से भी पूछा पर उसने भी वही रवैया अख्तियार किया। न्यायप्रमुख ने जोर देकर कहा- आपके मौन से अपराध न छिप सकता है, न कम हो सकता है। आप उत्तर देकर न्यायप्रक्रिया में सहयोगी बनें।

साथी बार-बार पूछने पर बोला- महोदय! न मैं कुछ जानता हूँ और न कुछ कहना चाहता हूँ।

न्यायप्रमुख तुरंत बोले- इसका अर्थ हुआ, तुम जानते हो पर न्याय की अवहेलना कर रहे हो। यह तुम्हें समझना चाहिए कि अपराधी की अपेक्षा अवहेलना करना बड़ा अपराध है। तुम न्याय का सम्मान करने के लिए जो जानते हो वह बताओ, परंतु उसने वही उत्तर पुनः दोहरा दिया।

न्यायाधिकारी पुनः युवराज की ओर सन्मुख हुए- आप कुछ कहना चाहते हो!

हाँ, मैं स्वीकार करता हूँ कि मैं रात्रि में नगर सेठ के

भंडार में चोरी के इरादे से प्रविष्ट हुआ था। चोरी की भी परंतु मैं इसे अपराध नहीं मानता हूँ। यह भी एक कला है। अपनी चतुराई अथवा कला के माध्यम से प्राप्त करना अपराध की श्रेणी में नहीं आता।

पुष्पचूल का ऐसा बेतुका तर्क सुनकर पूरी सभा में सन्नाटा पसर गया। एक भावी राजा के ऐसे अन्याय पूर्ण उत्तर की तो कल्पना भी कैसे हो सकती थी? अपराध हो जाना अलग है, पर उसे सही साबित करना तो ऐसे ही है जैसे चोरी और सीना चोरी।

राजा का क्रोध जैसे आसमान पर चढ़ गया।

कितना नालायक और उच्छृंखल हो गया है। क्या यह भूल गया है कि यह किस राज परिवार का वंशज है। भरी राजसभा में इसे बोलने की तमीज ही नहीं रही। संभव है हमारी अथवा युवरानी की स्थिति देखकर न्यायविशारद इसकी सजा कम कर लेते पर इसकी आत्मघाती जुबान ने इसकी सजा और बढ़ा दी है।

न्यायाधीश ने अत्यन्त गंभीरता पूर्वक कहा- युवराज श्री! चोरी न तो चतुराई है, न बहादुरी है, बल्कि पराया माल उसकी बिना अनुमति के चुराना अपराध है। अगर अभी भी आपके मन में अपने आचरण के प्रति पश्चाताप अथवा ग्लानि हो तो आप बता सकते हैं।

बिना संकोच युवराज बोले- जब मैं चोरी को अपराध ही नहीं मान रहा हूँ तो फिर पश्चाताप वाली बात ही कहाँ रह जाती है। आप जो भी उचित समझे, सजा दे सकते हैं।

उन्होंने आपस में विचार विमर्श किया और महारानी को सम्बोधित करते हुए कहा- हमारे मत में इस प्रकार के अपराधी और उसके सहयोगियों को दस-दस वर्ष के कठोर कारावास की सजा सुनायी जाती है। फिर भी युवराज अपवाद हो सकते हैं।

युवराज अगर भविष्य में अपराध न करने का संकल्प लें तो इन्हें परिवर्तन का मौका मिलना चाहिए। आखिर इनका जीवन इनका ही नहीं है। संपूर्ण प्रजा के भाग्य की डोर इनसे जुड़ी हुई है। अब निर्णय की डोर महाराजा के हाथ में है।

महाराजा का चेहरा भावहीन था। उनकी आँखें जैसे पथरा गयी थी। ऐसा लग रहा था वे वहाँ होकर भी वहाँ नहीं है। एक ओर पुत्र का मोह था तो दूसरी ओर न्याय का तकाजा था। वे इस समय जिस प्रकार की पीड़ा को झेल रहे थे, उसे अन्तर्यामी प्रभु के अलावा कौन समझ सकता था!

महामंत्री ने राजा को हल्के से झिंझोडा। सिर झटकते हुए महाराजा ने अपना गला साफ किया और अपने न्याय की घोषणा करते हुए कहा- जिस गरिमाशाली पद पर युवराज आसीन थे, उन्होंने उस पद की गरिमा के साथ धोखा किया है। वे दुगुने अपराधी हैं, उन्हें आजीवन इस राज्य से निष्कासित किया जाता है। वे कल शाम तक इस राज्य को छोडकर अपना भविष्य तय करें।

इसी के साथ महाराजा आसन से उठ खड़े हुए। राजा के उठते ही पूरी राज्यसभा खड़ी हो गयी। महामंत्री ने सभा विसर्जन की घोषणा की। (क्रमशः)

जिनमणिप्रभसूरि को नमन हमारा

(मांझी नैया ढूंढे किनारा)

-साध्वी सम्यक्प्रभाश्रीजी म.

जिनमणिप्रभसूरि को नमन हमारा।
जिनके मुख से झरती है अमृत धारा ।।
सूरि वर शत शत नमन हमारा ।
मनोज्ञसागरसूरि संग हुआ सोने में सुहागा ।।
खरतरगच्छ का भविष्य उज्ज्वल
तुझसा पाया प्रबुद्ध सूरि वर ।
तेरे नेतृत्व में फले गच्छ खरतर प्यारा ।।1।।

मौन साधना पूर्वक ध्यान
सूरि मंत्र का पूर्ण किया अनुष्ठान ।
त्रिकरण योग से पूछे कुशल क्षेम तुम्हारा ।।2।।
सज्जन के जिनमणिप्रभसूरीश्वर
शशि सी निर्मलता मन में भर ।
सम्यग्दर्शन की प्रभा में निखरे भव तुम्हारा ।।3।।

स्मृति शेष

मातृ वत्सला सुश्राविका श्रीमती प्रेमलताजी डोसी

प्रमोद गुरु चरणरज डॉ. साध्वी विद्युत्प्रभाश्री जी म.

कृष्णगिरी पार्श्व पद्मावती शक्तिपीठ का परम पावन धाम! प्राकृतिक सौन्दर्य की भरमार... चारों ओर ऊँची ऊँची पहाडियाँ! बीच में परम आराध्य विश्व की सर्वोच्च सत्ता प्रभु पार्श्वनाथ का उत्तुंग जिनालय!

हमारा पूरा मंडल काफी समय से कृष्णगिरि की महकती माटी में साधना का सौन्दर्य पी रहा था। अचानक 26 मई की रात्रि में ज्योंहि हम शयन की तैयारी कर रहे थे कि सूचना मिली- संघवण श्रीमती प्रेमलता जी डोसी का अभी-अभी स्वर्गवास हो गया है।

सुनकर मन जैसे सन्नाटे में डूब गया। अभी तक पसरा हुआ अंधेरा जैसे विश्राम का संकेत कर रहा था पर अब यह अंधेरा भयानक लगने लगा।

मेरे मन में एक साथ उनके अनेक बिम्ब प्रतिबिंबित हो उठे। प्रेमलता जी मेरे सम्पर्क में सन् 2004 से है। 2004 में हमारा चातुर्मास पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.सा. (तत्कालीन उपाध्याय) की निश्रा में बैंगलोर था।

यद्यपि गुरुदेव श्री की निश्रा में होने के कारण संघ के साथ मेरा संपर्क नहींवत् था, पर जब पर्युषण के बाद उपधान तप की आराधना एवं आयोजन के रूप में विजयराजजी डोसी के नाम की घोषणा हुई तो स्वाभाविक रूप से उनका आना-जाना हमारे यहाँ बढ़ गया था।

सर्वप्रथम वे एक सामान्य कद काठी की महिला के रूप में मेरे से रूबरू हुए पर जब उनका आना जाना बढा तब मैंने जाना कि वे दिखने में भले ही साधारण महिला है पर आंतरिक व्यक्तित्व की अपेक्षा विशिष्ट है।

पर्युषण के तुरंत बाद उपधान तप में वे अपनी

सास के साथ आराधक के रूप में सम्मिलित हुए।

किसी भी व्यक्ति की वास्तविक पहचान उनके साथ रहने से ही होती है। सुश्राविका प्रेमलता जी का भावजगत जानने और समझने के लिए दो माह लगभग पर्याप्त थे।

उपधान तप की आराधना आम लोगों के लिए दुष्कर मानी जाती है। अन्य समस्त तप में आराधक अपना समय व्यतीत करने के लिए स्वतन्त्र होते हैं, परंतु उपधान की आराधना तो अत्यन्त अनुशासित, गुरु भगवंतों के निर्देशानुसार नियमित करनी होती है। चाहे अमीर हो, चाहे गरीब, शिक्षित हो या अशिक्षित उपधान तप की क्रियाविधि में कहीं शिथिलता नहीं आ सकती।

सुश्राविका प्रेमलता जी ने अत्यन्त अनुशासित आराधिका के रूप में अपनी छवि पेश की। ब्रह्म मुहूर्त में उठने से लेकर शयन तक उनकी समस्त क्रियाएं विधिवत् सम्पन्न होती थी। यथासंभव वे मौन में रहने का ही प्रयत्न करते थे। आनंद और प्रसन्नता से दमकता उनका चेहरा ही बिना बोले बहुत कुछ कह जाता था। उपधान तप में खुद तपस्वी होने पर भी वे सदैव यह ध्यान रखने का प्रयत्न करते थे कि किसी भी आराधक को कोई कष्ट न हो। अगर किसी को कोई परेशानी है तो वे उनका समाधान होने के बाद ही

निश्चित होते थे।

उपधान तप में आराधकों के लिए सामूहिक एक हॉल की व्यवस्था थी। उसी हॉल में एक साथ वे सबके साथ ऐसे रहते थे जैसे ये सब उनके परिजन ही है।

उसके बाद वे हमारे साथ रहे खजवाणा से नाकोडा संघ में। श्री डोसी जी का लंबे समय का सपना था अपने गृहनगर से नाकोडा के यात्री संघ का आयोजन करना। पूज्यश्री के प्रति उनकी श्रद्धा बेजोड़ थी। पू. गुरुदेव ने उनका सपना साकार करते हुए खजवाणा से नाकोडा पदयात्रा संघ का मुहूर्त भी दिया और निश्रा हेतु स्वीकृति भी।

17 दिवसीय इस पद यात्रा संघ में श्री डोसी जी सपत्नीक विधिवत् आराधक भी थे। प्रेमलता जी विधिवत् यात्रा करते थे, वहीं संघ में पधारे समस्त परिजनों की देखभाल भी करते थे।

श्री डोसीजी इस सदंर्भ में खूब भाग्यशाली थे। उन्हें भाग्य से ऐसी पत्नी प्राप्त हुई थी जो उनके इंगित को आदेश मानकर सदैव उन्हें गृह व्यवस्था से निश्चित रखती थी। इतना विशाल परिवार होते हुए भी प्रेमलता जी की ऊँची आवाज शायद ही किसी ने सुनी हो। उन्हें सतत मुस्कराते हुए रहने की ही आदत थी।

उपधान की विशिष्ट आराधना हो अथवा संघ का भारी हजूम, प्रेमलता जी को न कभी तनाव में देखा. .. न व्यर्थ किसी कार्य में हस्तक्षेप करते।

इसका परिणाम भी उन्हें मिला। परिवार में उनका बेहद सम्मान था। परिवार चाहे ससुराल का हो या पियर का उनका समर्पण किसी ने कम नहीं आंका।

घर में हल्का सा उतार-चढाव देखते तो डोसी जी के अनुशासन प्रिय मन को यह स्वीकार नहीं होता था। उनकी नाराजगी का निशाना बनते प्रेमलताजी। तुरंत प्रेमलता जी के बचाव में बहुएं सामने आ जाती। पुत्रवधु अरूणा एवं पमिता बोल उठती- अगर त्रुटि हमारी है तो आप हमें कहिए। मम्मीजी को अकारण आप उपालंभ नहीं दे सकते। और डोसीजी की नाराजगी बहुओं का यह सासु-प्रेम देखकर तुरंत मुस्कान में बदल जाती।

संघवी श्री विजयराजजी डोसी की वर्षों से भावना थी कि मैं परमात्मा एवं मेरे आराध्य नाकोड़ा भैरव देव का मंदिर बनाऊं। संयोग से पूज्य गुरुदेवश्री की भावना थी कि गिरनार महातीर्थ पर जिन मंदिर दादावाडी आदि का भव्य आयोजन हो।

गुरुदेव श्री ने डोसीजी को प्रेरणा दी। डोसीजी सपरिवार गिरनार पहुँच गये। गिरनार की जमीन उन्हें पसंद आ गयी। जैसे ही जमीन तय की, उन्होंने तुरंत मुझे इचलकरंजी समाचार भिजवाये कि आज हमारा वर्षों का सपना साकार हो रहा है। उस समय मैं उनकी चहकती आवाज सुनकर ऐसा महसूस कर रही थी कि संभवत: आज प्रेमलताजी पुन: प्रौढ़ावस्था छोड़कर युवावस्था में प्रविष्ट हो गये हैं।

डोसीजी कहते हैं- गुरुदेव की कृपा से गिरनार तीर्थ में उनके हाथों से जमीन का कार्य सम्पन्न हो गया। अन्यथा आजीवन मैं इस अहसास से उभर नहीं पाता कि उनकी

साधना अधूरी रह गयी। ग्लानि का जहर मुझे अमृत के कुंड में भी चीरता रहता।

मेरे निवेदन पर समयाभाव होने पर भी 600 कि. मी. का उग्र विहार कर गुरुदेव गिरनार पधारे। हम भी सपरिवार वहाँ पहुंच गये। गुरुदेव ने अनुग्रह करके तीर्थ के लिए तय जमीन पर भूमिपूजन कराते हुए दिक्पाल पूजन, नवग्रह पूजन आदि संपन्न करवाया। कम से कम उनके हाथों से छोटा ही सही चतुर्विध संघ की उपस्थिति में कार्यक्रम तो हो गया।

उस समय मैं कहाँ सोच पायी थी कि वे अपने पति के तय कार्य में सदैव भले ही सहचरी रही हैं। पर अपने जीवन के इस महत्वपूर्ण स्वप्न पूर्ति में तो धोखा दे देंगी। क्या उनका आनंद था... क्या उनकी प्रसन्नता थी... उनके कितने अरमान थे। पर प्रकृति को मंजूर नहीं थी उनकी खुशियाँ।

फरवरी के द्वितीय सप्ताह के प्रारम्भ में मैं बैंगलोर पहुंची थी। डोसीजी के निवेदन पर हमने उनके घर पर एक दिन का प्रवास किया था। हमें पूरे ग्रुप के साथ देखकर कितना आनंद बरसाया था प्रेमलताजी की नेह भरी ऑखों ने। वैयावच्च में वे अप्रतिम थे।

हम विहार करके बैंगलोर से लगभग 60 कि.मी. के अंतर्गत पधारे थे। लगभग 6 से 7 घण्टा वे हमारे साथ रहे थे। हमारे कदम कृष्णगिरि की ओर बढ़े थे एवं उनके कदम बैंगलोर की ओर। उस समय मैं यह कल्पना भी कैसे कर सकती थी कि आज के बाद अब मेरी आँखें इन्हें इस जीवन में कभी नहीं देख पायेगी। यह आज इनके जीवन की अंतिम भक्ति है।

हंसते, मुस्कुराते, खिलखिलाते हमने उन्हें मांगलिक सुनाकर विदा किया। उन्होंने भी तुरंत दर्शन की भावना प्रकट करते हुए कहा- जो भी हमारे योग्य सेवाकार्य हो हमें अवश्य लाभ दें।

हम उनके सरल, स्नेह भीगे शासन रस सराबोर व्यक्तित्व की चर्चा करते हुए आगे बढ गये और अचानक 26 मई की रात्रि को बिना किसी व्याधि के वे हमसे जुदा हो गये।

उनके स्वर्गवास के पश्चात् जब मैंने उनकी अंतिम स्थिति की जानकारी पूछी तो बताया- एक दिन पूर्व तो उन्होंने अपने पोते-पोतियों एवं नातियों के कहने से शादी की सालगिरह मनायी थी। पूरे परिवार के साथ घर के आनंद भरे माहौल में उन्होंने सबके साथ खूब खुशियां बांटी थी।

मृत्यु के दिन शाम को चौविहार के पच्चक्खाण करके उन्होंने डोसीजी को कहा- आज कंधे में हल्का दर्द है। संपूर्ण जीवन में सतत सेवा करके भी जिन्होंने आज तक कभी अपने लिए होंठ नहीं खोले थे। लगातार आठ-आठ वर्ष लकवाग्रस्त ससुर की सेवा के कारण जिन्होंने पियर का द्वार तक नहीं देखा था, पूरे परिवार को जिसने अपने समर्पण और त्याग की नींव पर खड़ा किया था। चार बजे प्रस्थान करना है घर से और तीन बजे भी कार्यक्रम बताया हो तो बिना ललाट में बल डाले तुरंत तैयारी कर लेते, जिनके मुँह से पूरे परिवार ने सदा सकारात्मक उत्तर ही सुना हो, आज उनके मुँह से अपनी तकलीफ की बात...।

(शेष पृष्ठ 33 पर)

कहानी
2

शील तारणहार

—मुनि समयप्रभसागरजी म.

गतांक से आगे...

नर्मदा चन्द्र की कलाओं की तरह वृद्धि पाने लगी। नर्मदा के रूप-सौन्दर्य में उम्र के अनुसार निखार आने लगा। नर्मदापुरी में ही अपना बचपन पूर्ण कर युवावस्था में प्रवेश कर गई। उसके रूप लावण्य की चर्चा फैलते-फैलते ऋषिदत्ता के कानों तक पहुँची। ऋषिदत्ता ने नर्मदासुन्दरी के रूप लावण्य की चर्चा सुनी और मन ही मन यही विचार करने लगी कि नर्मदासुन्दरी मेरी पुत्र वधु बने तो बहुत अच्छा होगा। फिर दूसरे ही पल विचार आया कि मेरा भाई सहदेव दृढ जैनधर्मी है और मेरे द्वारा तो जैनाचार का पालन छूट गया है। इसलिए वह इस घर में अपनी पुत्री को नहीं देगा। इस प्रकार विचार करते-करते उसकी चिन्ता रुदन में बदल गई और वह विलाप करने लगी और उसी समय रुद्रदत्त का घर पर आना हो गया। अपनी पत्नी को विलाप करते हुए देखकर वह चिन्ता में डूब गया कि अचानक ऐसा क्या हो गया है कि यह इस तरह विलाप कर रही है। पत्नी को सान्त्वना देकर उससे विलाप का कारण पूछा। तब ऋषिदत्ता ने सारी बात बताकर कहा- नर्मदासुन्दरी को बहु बनाने का सपना साकार होना भी मुश्किल लग रहा है। इतनी बात सुनते-सुनते रुद्रदत्त को भी अपने विवाह सम्बन्धी ऋषिदत्ता को प्रथम बार देखने से लगाकर शादी तक का सारा दृश्य स्मृति पर चलचित्र की भाँति दिखने लगा। उसने ऋषिदत्ता को समझाकर शान्त किया।

दोनों ही अभी तक चिन्ता के सागर से बाहर निकल नहीं पाये थे कि इतने में महेश्वरदत्त भी घर आ गया। अपने माता-पिता को उदास देखकर चिन्ता का कारण पूछा। तो माँ ने सारी बात महेश्वरदत्त को बताई। महेश्वरदत्त ने तुरन्त कहा- हे माता-पिता आप चिन्तित न हो मैं शीघ्र ही नर्मदासुन्दरी से शादी करके आप की इच्छा पूरी करूंगा।

महेश्वरदत्त ने अपने माता-पिता की इच्छा पूरी करने के लिए स्वयं को तैयार किया। नर्मदासुन्दरी से शादी करने के लिये मामा व नर्मदासुन्दरी को कैसे तैयार करूं। इस प्रकार से विचारणा कर मन ही मन योजना तैयार की और नर्मदापुरी के लिये घर से निकल पड़ा।

नर्मदापुरी आकर अपने मामा सहदेव से मिला। अपने व्यवहार को अपने पिता रुद्रदत्त से भी ज्यादा शालीन बनाया। विनय आदि गुणों से सबके दिल को जीतने का प्रयत्न करने लगा। जिनपूजा, गुरु भगवन्तों के दर्शन-वन्दन और धर्माराधना करते हुए शीघ्र ही पूरे परिवार का दिल जीतने में सफलता प्राप्त की। इसके परिणाम स्वरूप सहदेव ने अपनी पुत्री नर्मदासुन्दरी का विवाह महेश्वरदत्त के साथ कर दिया। थोड़े दिन वहाँ रहकर अपने सास-ससुर की आज्ञा लेकर वह नर्मदासुन्दरी को लेकर चन्द्रपुर आ गया।

वधू सहित अपने पुत्र के आने के समाचार सुनकर ऋषिदत्ता और रुद्रदत्त को अतीव प्रसन्नता हुई। दोनों ने पुत्र और पुत्रवधू का स्वागत किया। नर्मदासुन्दरी ने अपने संस्कारों से पूरे परिवार में शुद्ध श्रद्धा के दीप प्रकट कर परिवार में धर्ममय वातावरण बनाकर घर को सुशोभित किया। पूरा परिवार धर्ममय जीवन जीने लगा।

एक दिन गवाक्ष में खड़ी हुई नर्मदासुन्दरी नगर के लोगों को दिन में चन्द्रोदय का भ्रम कराती हुई पान चबा रही थी। उसने पान की पीक थूकते समय ध्यान नहीं रखा और वह पान की पीक पथ पर चलते हुए मुनि के सिर पर गिरी। मुनि ने सहज भाव से कहा कि तुम्हारे द्वारा की गई इस प्रकार आशातना से भविष्य में तुम्हें पति वियोग करायेगा। इतना

सुनते ही वह विषाद करती हुई तुरन्त नीचे उतरकर मुनि के सम्मुख आकर हाथ जोड़कर बोली- मेरी असावधानी से यह भूल हो गई है। मैं क्षमायाचना करती हूँ। मुनि ने कहा कि मेरे मन में तुम्हारे प्रति जरा भी क्रोध नहीं है और ये शब्द सहज ही मेरे मुख से निकल गए है। इसलिये तुम विषाद मत करो। नर्मदासुन्दरी कर्मों को दोष देती हुई घर आ गई।

महेश्वरदत्त ने धनार्जन के लिये विदेश जाकर व्यापार करने का निश्चय किया। तब वियोग सह पाने में असमर्थ ऐसी नर्मदासुन्दरी ने पति के साथ चलने का आग्रह किया। उस मोहाकुल मन वाली नर्मदा के आग्रह को महेश्वरदत्त टाल न सका और साथ में ले चलने का निर्णय कर माता-पिता से आज्ञा ली। दोनों दूसरे द्वीप की तरफ जाने वाले दूसरे यात्रियों के साथ जहाज में सवार होकर रवाना हो गए।

जहाज में रात-दिन सफर जारी था। यात्री अपनी-अपनी रुचि के अनुसार अपना समय व्यतीत करते थे।

एक रात्रि जहाज में किसी पुरुष के गाने की आवाज सुनी। नीरव शान्त वातावरण में संगीत स्पष्ट सुनाई दे रहा था। उस संगीत को सुनकर संगीत-विद्या की जानकार नर्मदासुन्दरी ने अपने पति को अपनी कला का परिचय कराने के शुभ आशय से कहा कि मैं यहाँ बैठी हुई संगीत गाने वाले की विशेषताएं बताती हूँ- 'यह पुरुष जो गा रहा है वह श्याम वर्ण का है, उसकी उम्र बावीस वर्ष है।' उसके हाथ-पैर स्थूल है और शरीर दुर्बल है। वह विशाल हृदय वाला है, उसके गुप्त स्थान पर मस्सा है। इतनी बातें बताकर उत्सुकता वश वह अपने पति के उत्तर का इन्तजार करने लगी।

महेश्वरदत्त यह सारी बातें सुनकर सन्देह और अविश्वास की भट्टी में गिरकर अपने आप को तपाने लगा। मन ही मन यह सोचने लगा कि लगता है यह अपना सतीत्व गवाँ बैठी है इसका चरित्र अच्छा नहीं है पर अपने आपको मौन रखकर शान्त रहा। सुबह उसने उस गाने वाले व्यक्ति से सम्पर्क किया। नर्मदासुन्दरी द्वारा बताई हुई सारी विशेषताएं सही निकली। उसका सन्देह दृढ़ विश्वास में बदल गया और वह क्रोध से तमतमा उठा और नर्मदासुन्दरी को उसके दुष्कृत्य की सजा देने के लिये उसने अवसर की प्रतीक्षा के लिए मन को सहमत किया। और उचित अवसर की प्रतीक्षा करते-करते एक दिन वह अवसर उसे मिल गया।

जहाज अभी भी चल रहा था और एक दिन नाविक ने घोषणा करते हुए कहा- अभी हम राक्षस द्वीप के तट पर पहुँच रहे है, यहाँ जहाज रोकेंगे। जो भी यात्री जल-ईंधनादि यहाँ से लेने के इच्छुक है वे शीघ्र ही यहाँ से एकत्रित कर लें। जिसको जिस वस्तु की आवश्यकता थी वह उसे प्राप्त करने के लिए उचित स्थानों पर पहुँचने लगे। महेश्वरदत्त मन ही मन नर्मदासुन्दरी से पीछा छुड़ाने के लिये षड्यंत्र रचने का प्रयास कर रहा था। कभी उसका मन कहता कि इसे जहर दे दूँ तो कभी कहता कि इसे समुद्र में गिराकर मार डालूं। मगर दूसरे ही पल दूसरा विकल्प आ जाता। इन्हीं विचारों की उथल पुथल में महेश्वरदत्त को इन सब विचारों से हटकर अलग विचार आया और वह उसे ज्यादा आसान और उचित जानकर क्रियान्वित करने के लिए वह नर्मदासुन्दरी को लेकर जहाज से नीचे उतरा। क्रीड़ा करने के बहाने समुद्र के तट पर घूमते-घूमते थोड़ी ही दूर स्थित कदली के वन में जा पहुँचे। वहाँ का रमणीय दृश्य दोनों को अच्छा लगा।

केलों के पेडों की सघन छाया और केलों के पत्तों के हिलने से आती ठण्डी हवा का अच्छा स्थान जानकर केलों के पत्तों की कोमल शय्या बनाकर दोनों उस शय्या पर बैठे। नर्मदासुन्दरी अपने पति की गोद में सिर रखकर निश्चिन्त होकर सो गई और शीतल हवा के झोंकों के कारण उसे शीघ्र ही नींद आ गई। महेश्वरदत्त के कुटिल मन को यह सबसे अच्छा अवसर लगा। तुरन्त महेश्वरदत्त ने निश्चिन्त सोयी नर्मदासुन्दरी के सिर को केलों की कोमल शय्या पर रखा। नर्मदासुन्दरी निश्चिन्त थी। उसके चेहरे पर प्रसन्नता छाई हुई थी और उस प्रसन्नता ने जैसे उसके द्वेष की आग में और घी डाला हो। महेश्वरदत्त कठोर बनकर नर्मदासुन्दरी को सुख से गहरी निद्रा में जानकर तुरन्त वहाँ से खिसक गया और थोड़ा आगे जाकर तेजी से जहाज की तरफ भागने लगा।

(क्रमशः)

जहाज मंदिर में सूरि मंत्र की साधना संपन्न

मांडवला 6 नवंबर। पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष आचार्य भगवंत श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. की समाधि भूमि जहाज मंदिर, मांडवला में पूज्य आचार्यश्री के शिष्य-द्वय पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. पूज्य ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक आचार्य श्री जिनमनोज्ञसूरीश्वरजी म.सा. ने सूरि मंत्र की प्रथम पीठिका की 21 दिवसीय साधना तप, त्याग, जाप एवं मौन के साथ अत्यन्त आनंद व उल्लास के साथ संपन्न की।

ता. 17 अक्टूबर 2020 से प्रारंभ हुई इस साधना की पूर्णाहुति ता. 6 नवम्बर 2020 को महामांगलिक के साथ पूर्ण हुई।

पूज्य गच्छाधिपति आचार्यश्री सूरि मंत्र की पांचों पीठिकाओं की साधना एक बार कर चुके हैं। उन्होंने दूसरी बार यह साधना प्रारंभ की है।

इस हेतु जहाज मंदिर स्थित एक विशाल हॉल को सुव्यवस्थित रूप से सजाया गया था। परमात्मा महावीर की प्रतिमा प्रतिष्ठित की गई। अन्य स्फटिक आदि रत्नों की प्रतिमाऐं बिराजमान की गई। समवशरण, प्रभु-रथ, पावापुरी आदि के चित्र सजाये गये जो लकडी पर चित्रित किये गये थे।

ता. 6 नवम्बर को दशदिक्पालपूजन, नवग्रहपूजन, क्षेत्रपाल पूजन, पंच पीठिकाओं के अधिष्ठायक देव देवी-सरस्वती देवी, त्रिभुवनस्वामिनी, महालक्ष्मी, गणिपिटक यक्षराज एवं गणधर श्री गौतमस्वामी भगवान की विशेष पूजा की गई। इसके बाद 1200 बार पूजन एवं आहुति विधान संपन्न हुआ।

ठीक साढे नौ बजे पूज्य आचार्यद्वय श्री साधना-कक्ष से बाहर पधारे। श्रद्धालु वर्ग ने जयघोष से नभमंडल गुंजायमान किया।

पूज्यश्री चतुर्विध संघ के साथ जिन मंदिर पधारे। परमात्मा के चैत्यवंदन, गौतमस्वामी वंदन, दादा गुरुदेव को वंदन एवं पूज्य आचार्यश्री जिनकान्तिसागरसूरि समाधि स्थल के दर्शन वंदन करने के पश्चात् उत्सव-स्थल पधारे। वहाँ पूज्यश्री का महामांगलिक समारोह आयोजित किया गया।

पूज्य गच्छाधिपति आचार्यश्री ने कहा- ज्ञान, यश, वृद्धि, शक्ति और लब्धि की विशिष्टता इस साधना का परिणाम है। उन्होंने कहा- हमने साधन में सुख माना है जबकि वह भ्रमणा है। असली सुख साधना का सुख है। 21 दिनों की साधना में जो आनंद

की अनुभूति हुई है, वह अभिव्यक्ति की सीमाओं से बहुत परे है। उन्होंने कहा- साधना का सुख वही प्राप्त कर सकता है जो हर परिस्थिति में प्रसन्न रहना जानता हो।

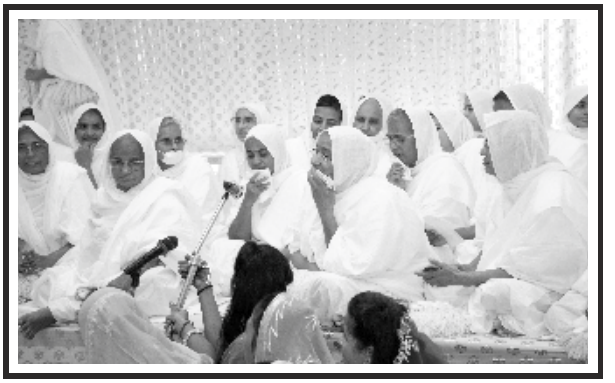

इस अवसर पर पूज्य आचार्यश्री जिनमनोज्ञसूरिजी म. ने कहा- यह पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री की इस समाधि भूमि का ही पुण्य प्रताप है और उनकी ही कृपा का परिणाम है कि उनकी इस पुण्य भूमि के दिव्य वातावरण में हमारी साधना आनंद से संपन्न हुई। मैं कभी तपस्या नहीं कर पाता, पर पूज्य आचार्य श्री के दिव्य आशीर्वाद का ही परिणाम है कि 21 दिनों तक नीवी, उपवास आदि तपस्या मेरे द्वारा संपन्न हुई।

इससे पूर्व सभा-संचालन में अपने विचार व्यक्त करते हुए पूज्य मुनिश्री मनितप्रभसागरजी म. ने कहा- गुरु और सद्गुरु में अन्तर है। गुरु निर्वाह का मार्ग बताते हैं जबकि सद्गुरु निर्माण का मार्ग बताते हैं। सूरिमंत्र की साधना तप और जप का सुनहरा संगम है। तप के द्वारा तन की शुद्धि की जाती है, जप के द्वारा मन की शुद्धि की जाती है। मौन के द्वारा वाणी की शुद्धि की जाती है। इन तीनों की शुद्धि से आत्म-शुद्धि का प्रयोजन स्वतः सिद्ध होता है। उन्होंने सूरि मंत्र साधक गुरुद्वय में समानता घटित करते हुए कहा- दोनों एक ही समुदाय, गच्छ और गुरु के गौरव हैं। गुरुदेव का सांसारिक नाम मीठालाल और आचार्य जिनमनोज्ञसूरि का सांसारिक नाम मिश्रीमल! मिश्री तो सदा-सदा मीठी ही होती है। जिसमें मीठापन नहीं, वो मिश्री नहीं। दीक्षा के बाद मणि-मनोज्ञ बने, इसका अर्थ है कि मूल्यवान् मणि तो हर किसी को मनोज्ञ अर्थात् मनप्रिय होती ही है।

पूज्य मुनि श्री मेहुलप्रभसागरजी म. ने कहा- इस काल में सूरि मंत्र विद्या सर्वप्रथम श्री आदिनाथ प्रभु ने पुंडरीकस्वामीजी को प्रदान की थी। और परमात्मा महावीर ने गौतमस्वामी आदि गणधरों को प्रदान की थी। यह सूरि मंत्र पुण्य के प्रकर्ष का कारण है, जो शासन के कार्यों में सदैव सहयोगी बनता है। पूज्य गुरुदेव एवं आचार्य भगवंत को हमारी तरफ से अनेकशः बधाईयों के साथ निवेदन कि हम पर आपश्री की कृपा दृष्टि सदा-सदा बनी रहे।

पूज्य मुनि श्री नयज्ञसागरजी म. ने कहा- पिछले वर्ष से गच्छाधिपतिश्री के निरन्तर सानिध्य में जीवन की अप्रतिम सौरभ का अनुभव कर रहा हूँ। इस बार गुरु धाम में चातुर्मास में स्वाध्याय एवं विचारधारा को पुष्ट बनाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। सूरि मंत्र की साधना में मेरे आराध्य प्यारे गुरुदेव की सेवा का मुझे जो अवसर मिला है, वह मेरे जीवन का अनमोल नजारा है। जिसका मुझे अपार नाज है। आप दोनों गुरुदेव की सेवा का अवसर इसी प्रकार मुझे मिलता रहे।

इस अवसर पर प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म., पूज्या साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म., पूज्या साध्वी श्री कल्पलताश्रीजी म. ने अपनी शुभकामनाऐं अर्पण करते हुए पूज्य आचार्यश्री के दिव्य व्यक्तित्व का वर्णन किया। साध्वी मंडल ने गीतिकाऐं प्रस्तुत की।

मुमुक्षु शुभम् सिंघवी, मुमुक्षु रजत सेठिया, मुमुक्षु माधुरी चौपडा, मुमुक्षु रवीना सेठिया, मुमुक्षु कोमल धारीवाल, मुमुक्षु सोना ने अपने विचार व्यक्त किये।

पूज्य मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म. एवं पूज्य मुनि श्री मयूखप्रभसागरजी म. द्वारा रचित गीतिका को मुमुक्षु रवीना सेठिया ने प्रस्तुत किया। ट्रस्ट के

जहाज मंदिर में सूरि मंत्र ...

कार्याध्यक्ष श्री द्वारकादासजी डोसी एवं मंत्री श्री सूरजमलजी देवडा धोका ने अपने विचार व्यक्त किये एवं ट्रस्ट की ओर से शुभकामना दी।

श्री संघ की ओर से गुरु पूजन का विशिष्ट लाभ शेरगढ़ निवासी श्री गुलाबचंदजी भरतकुमारजी हेमंतकुमारजी लूणिया परिवार ने लिया। इस अवसर पर पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. द्वारा लिखित सात रंग के सपने नामक पुस्तक का विमोचन किया गया, जिसका लाभ श्री रोहित मालू की स्मृति में श्री मांगीलालजी मालू परिवार बाडमेर-मालेगांव वालों ने लिया।

साधना-काल की व्यवस्था का समस्त उत्तरदायित्व पूज्य मुनि श्री मयूखप्रभसागरजी म. ने सम्हाला।

प्रतिदिन पूजा आदि विधान में मुकेश पूनमारामजी प्रजापत एवं लीलसिंह का योगदान रहा। सूरि मंत्र महापूजन में विधि संचालन संजय ककरेचा भाटखेडी ने कराया।

ओली का पारणा संपन्न

बेंगलूरु 20 नवंबर। पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म.सा. पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा का चातुर्मास बेंगलूरु बसवनगुडी में अध्ययन, स्वाध्याय के साथ आनंद पूर्वक चल रहा है।

पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. के वर्धमान तप की 43वीं ओली का पारणा कार्तिक शुक्ल 6 को संपन्न हुआ। साथ में साध्वी निष्ठांजनाश्रीजी म. का 18वी ओलीजी का पारणा सानंद सम्पन्न हुआ। श्रीसंघ ने उनकी तपस्या की भूरि भूरि अनुमोदना की।

अमेरिकी विश्वविद्यालय में पढ़ाया जाएगा जैन धर्म का पाठ

वाशिंगटन: कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय ने तीन भारतीय-अमेरिकी दंपतियों की ओर से दस लाख डॉलर का दान मिलने के बाद विश्वविद्यालय में जैन अध्ययन के एक पीठ की स्थापना की है।

भगवान विमलनाथ एंडाउड चेयर इन जैन स्ट्डीज यूनिवर्सिटी औफ कैलिफोर्निया, सांता बारबरा में जैन धर्म पर स्नातक कार्यक्रम विकसित किए जाएंगे और पढ़ाए जाएंगे। विश्वविद्यालय की ओर से बताया गया कि यहां जैन धर्म के सिद्धांत अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकांतवाद के बारे में अध्ययन कराया जाएगा तथा आधुनिक समाज में इनके क्रियान्वयन पर ध्यान दिया जाएगा।

इन्होंने दिया दान: वक्तव्य के मुताबिक डॉ. मीरा और डॉ. जसवंत मोदी ने वर्धमान चेरिटेबल फाउंडेशन के जरिये दान दिया। रीता और डॉ. नरेंद्र पारसन ने नरेंद्र एंड रीता पारसन फैमिली ट्रस्ट और रक्षा तथा हर्षद शाह ने शाह फैमिली फाउंडेशन के जरिये दान दिया। तीनों दंपतियों ने एक संयुक्त वक्तव्य में कहा- 'मानव जाति और सभी रूपों में जीवन की मदद करने तथा जलवायु परिवर्तन से निपटने का सबसे प्रभावी तरीका अहिंसा के सिद्धांत को बढ़ावा देना तथा सभी मतों के लोगों के प्रति सम्मान दिखाना है। जैन अध्ययन के लिए एक पीठ का समर्थन करना और उसकी स्थापना करना इस लक्ष्य की प्राप्ति का सबसे अच्छा तरीका है।'

महत्तरा साध्वी श्री विनिताश्रीजी की प्रतिमा स्थापित

इन्दौर 30 नवंबर। महत्तरा पद से विभूषित साध्वी श्री विनिताश्रीजी महाराज की प्रतिमा उनके देवलोकगमन के बाद एरोड्रम रोड पर महावीर बाग में स्थापित की गई।

मूर्ति अनावरण समारोह 30 नवंबर को सुबह 8.30 बजे पूज्य श्री ललितप्रभसागरजी महाराज के सानिध्य में हुआ। महत्तराजी का देवलोकगमन 93 साल की उम्र में 5 दिसंबर 2019 को रामबाग दादावाड़ी उपाश्रय में हुआ था। उन्होंने 13 वर्ष की उम्र में दीक्षा ग्रहण की थी। 80 साल लम्बा उनका दीक्षापर्याय रहा। पूरे जीवनकाल में वे धीर, गंभीर, सरल, सहनशील और समाधि भाव में रहीं। अपने अंतिम कुछ वर्षों तक वे रामबाग दादावाड़ी में रहीं।

जीरावला दादावाड़ी ट्रस्ट

जीरावला दादावाड़ी ट्रस्ट की मीटिंग शनिवार दिनांक 07/11/2020 को खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा. की निश्रा व मार्गदर्शन में आयोजित हुई।

मीटिंग में जीरावला दादावाड़ी के अध्यक्ष श्री प्रवीणजी संकलेचा सहित डॉ. यू.सी. जैन, प्रकाशजी छाजेड, दीपचंदजी कोठारी, धर्मेन्द्रजी पटवा, पुरूषोत्तम सेठिया, गौतम संकलेचा, अशोक संकलेचा व रिखबचंदजी मंडोवरा उपस्थित थे! संघवी श्री तेजराजजी गुलेच्छा विशेष रूप से उपस्थित थे।

सभी सदस्यों की विनती पर गुरुदेव ने मंगलाचरण के साथ जीरावला पार्श्वनाथ भगवान, गुरु गौतम स्वामी व दादा गुरुदेव को नमस्कार करके सभी सदस्यों को शासन के कार्य में आगे बढ़ने की प्रेरणा दी!

खरतरगच्छाधिपतिश्री गुरुदेव की प्रेरणा व मार्गदर्शन में सभी सदस्यों ने मीटिंग शुरू की।

मीटिंग में सबसे पहले जीरावला पार्श्वनाथ जिनालय की चर्चा शुरू की। मन्दिर कैसा बने, लम्बाई माप गम्भारा श्रृंगार चौकी व दादावाड़ी आदि कैसे बने इस पर विस्तार से चर्चा की गई।

सोमपुरा के साथ विस्तार से चर्चा कर कलात्मक जिनालय एवं दादावाडी का मानचित्र निर्णित किया गया।

दोपहर में पुनः आयोजित मीटिंग में धर्मशाला, भोजनशाला, प्रवचन हॉल, उपाश्रय, पेढ़ी के डिजाइन पर चर्चा की गई। इस पर सभी सदस्यों ने धर्मशाला आदि विषय को अगली मीटिंग मे विचार करने का निर्णय किया।

साथ ही ट्रस्ट के सभी सदस्यों ने गुरूदेव से विनती की कि आप चातुर्मास पश्चात् जीरावला पधारकर मन्दिरजी का कार्य शुरू करने का मार्गदर्शन देवें।

गुरूदेव के मांगलिक तथा अध्यक्ष के धन्यवाद प्रस्ताव के बाद मीटिंग सम्पन्न हुई।

प्रेषकः गौतम संकलेचा चेन्नई

जिनहरि विहार में ध्वजारोहण संपन्न

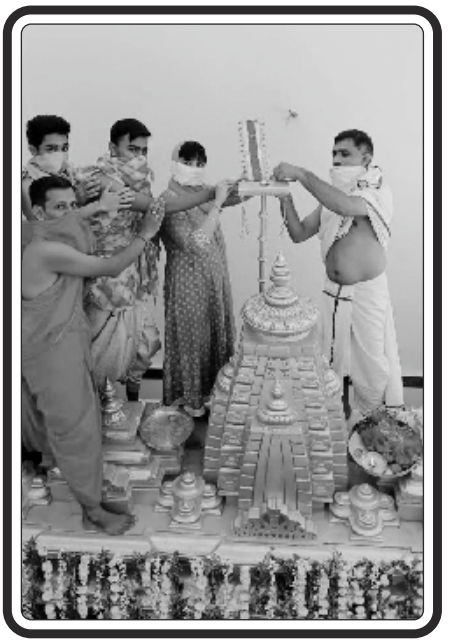

पालीताना 28 नवंबर। विख्यात श्री पालीताणा तीर्थ स्थित श्री जिनहरि विहार धर्मशाला के श्री आदिनाथ परमात्मा से सुशोभित मयूर मंदिर का 18वां वार्षिक ध्वजारोहण दि. 28 नवंबर 2020 को आनन्द व उल्लास के साथ संपन्न हुआ।

कायमी ध्वजा के लाभार्थी श्रीमती पुष्पाजी अशोकजी जैन परिवार द्वारा जिनमंदिर पर ध्वजा चढाई गई।

प्रात: अठारह अभिषेक का आयोजन किया गया। सतरह भेदी पूजा पढाई गई। यह समारोह पूज्य मुनिवर श्री पूज्य मुनिराज श्री मुक्तिप्रभसागरजी म.सा., पूज्य मुनिराज श्री मनीषप्रभसागरजी म.सा. आदि ठाणा एवं पूजनीया महत्तरा श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा, पूजनीया गणिनीवर्या श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा, पूजनीया साध्वीवर्या श्री प्रियदर्शनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा, पूजनीया साध्वीवर्या श्री अमितगुणाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा, पूजनीया साध्वीवर्या श्री श्रद्धांजनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा, पूजनीया साध्वीवर्या श्री आज्ञांजनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा, पूजनीया साध्वीवर्या श्री शांतरेखाश्रीजी म.सा. आदि साध्वी मंडल की पावन निश्रा में संपन्न हुआ। इस अवसर पर मंत्री श्री बाबुलालजी लूणिया, रतनलालजी हाला वाले, भेरू भाई लूणिया, राजेश कुमार धोका आदि अनेक श्रद्धालु उपस्थित थे।

इस मंदिर की प्रतिष्ठा वि.सं. 2059 कार्तिक सुदि 13 को पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म. (तत्कालीन उपाध्याय) की निश्रा में संपन्न हुई थी।

गच्छ-समुदाय के साधु-साध्वियों तथा श्री संघों को आवश्यक निर्देश

चातुर्मास की पूर्णता के पश्चात् साधु साध्वियों का विहार प्रारंभ होता है। परन्तु इस वर्ष कोरोना की समस्या है। विशेषज्ञों के कथनानुसार दिसम्बर माह में समस्या बढ़ने वाली है। कोरोना महामारी के वातावरण में विहार सुरक्षित प्रतीत नहीं होता। अत: वर्तमान स्थितियों पर विचार कर यह निर्देश दिया जाता है कि 31 दिसम्बर 2020 तक विहार स्थगित रखें।

विशेष कारणवश पूर्ण सुरक्षा व व्यवस्था के साथ आस-पास विहार अनुमति पूर्वक कर सकेंगे।

सकल श्री संघों को निर्देश है कि साधु साध्वीजी की वैयावच्च, भक्ति आदि का पूरी सुरक्षा के साथ ध्यान रखावें।

सभी साधु-साध्वीजी मास्क व सोश्यल डिस्टेंस का पूरा-पूरा पालन करें।

देवदर्शन में याद करें।

सभी साधु साध्वीजी को शाता पूछें।

– गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के पत्र से

तीर्थाधिराज श्री शत्रुंजय महातीर्थे

पू. आचार्य श्री जिनहरिसागरसूरिजी म.सा. की स्मृति में निर्मित

श्री जिनहरि विहार धर्मशाला में

संपन्न चातुर्मास के विविध लाभार्थी परिवार

पावन निश्रा

पूज्य मुनिराज श्री मुक्तिप्रभसागरजी म.सा., पूज्य मुनिराज श्री मनीषप्रभसागरजी म.सा. आदि ठाणा

पावन सांनिध्य

पूजनीया महत्तरा श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा, पूजनीया गणिनीवर्या श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा, पूजनीया साध्वीवर्या श्री प्रियदर्शनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा, पूजनीया साध्वीवर्या श्री अमितगुणाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा, पूजनीया साध्वीवर्या श्री श्रद्धांजनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा, पूजनीया साध्वीवर्या श्री आज्ञांजनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा, पूजनीया साध्वीवर्या श्री शांतरेखाश्रीजी म.सा.।

पावन वर्षावास के मुख्य लाभार्थी परिवार

संघवी श्री अशोककुमार-श्रीमती शोभादेवी, अनिकेत-शैली, अभिनय बेटा-पोता श्रीमती बदामीदेवी मानमलजी भंसाली परिवार, गढ़ सिवाना, अहमदाबाद (फर्म-M.A. Group, Ahmedabad)

पावन वर्षावास के रत्नस्तंभ लाभार्थी परिवार

- संघमाता इचरजबाई चंपालालजी डोसी हस्ते विजयराजजी डोसी–खजवाणा–बैंगलोर
- संघवी श्रीमती शान्तिदेवी पुखराजजी गुलेच्छा, मोकलसर हाल बैंगलोर
- श्री भंवरलालजी धर्मपत्नी सुआदेवी, पुत्र : ओमप्रकाशजी, अशोककुमारजी बेटा–पोता : विरधीचंदजी छाजेड़, बाड़मेर–मुंबई
- कलावती फाईनेन्स लिमिटेड, अहमदाबाद–कोयम्बत्तुर
- श्रीमती गोदावरीदेवी–व्यापारीलालजी, अंजुदेवी–रतनलालजी, मोनादेवी–हितेशकुमारजी बोहरा हालावाला–बाड़मेर, अहमदाबाद
- संघवी भंवरलालजी, राजेशकुमारजी, सुनीलकुमारजी, दिलीपकुमारजी भरतकुमारजी बेटा–पोता : वंसराजजी मण्डोवरा परिवार, सिणधरी–अहमदाबाद
- श्री विजयकुमारजी, अशोककुमारजी, राजेन्द्रकुमारजी, श्रेयान, अभिनव संचेती परिवार, जयपुर
- संघवी मातुश्री गजीदेवी–स्व. श्री मिश्रीमलजी बोथरा की प्रेरणा से सुपुत्र गौतमचंदजी, रतनलालजी, जगदीशजी बोथरा, विशाला–अहमदाबाद
- श्रीमती चुक्कीबाई चन्दनमलजी माणकचंदजी सुराणा की स्मृति में प्रकाशचंदजी, अशोककुमारजी, राजेन्द्रकुमारजी, धीरज, विरेन्द्र सुराणा–रायपुर
- श्री नेमीचंदजी राणामलजी छाजेड़–बाड़मेर
- श्रीमती चन्द्रीदेवी टोडरमलजी सुरेशचन्दजी, अशोक, विजय, अजीत कांकरिया परिवार (सुमीत ग्रुप रायपुर)
- श्री हुलासमलजीसा सायरदेवी, गौतमचंदजी–चन्द्रकला एवं राजेन्द्रजी कोठारी परिवार, नागौर
- संघवी श्रा. बाबुलालजी शान्तिलालजी भंवरलालजी बेटा–पोता : लाधमलजी मावाजी मरड़िया परिवार, चितलवाना–मुंबई
- श्रीमती सुखीदेवी रुपचन्दजी तातेड़ पुत्र : पुखराजजी सुमेरमलजी पौत्र : दिनेश, जितेन्द्र – पादरु–अहमदाबाद–सेलम
- श्री बाबुलालजी रमेशकुमारजी जितेन्द्रकुमारजी, सुनिलकुमारजी बेटा–पोता : केशरीमलजी बोथरा, बाड़मेर–अहमदाबाद
- संघवी श्रीमती सुशीलादेवी माणकचंदजी ललवाणी के ९वां वर्षीतप निमित्ते पुत्र–पुत्रवधू : अरुणकुमारजी–कवितादेवी, विवेककुमारजी–डिम्पलदेवी, गढ़ सिवाना–ईचलकरंजी–अहमदाबाद
- श्री पदमकुमारजी, प्रवीणकुमारजी, अनिकेत, सिद्धार्थ टाटिया, तिंवरी–चैन्नई
- श्री प्रकाशजी, हेमंतजी, विमलजी, किर्ती, कमल कानूंगो, सांचोर–मुंबई
- पूज्य दादाजी जीवणमलजी पू. पिताजी नेमीचंदजी के दिव्य आशीष से पू. माताजी धाईदेवी की स्मृति में बाबुलालजी–अ.सौ. शान्तिदेवी एवं भरतकुमार छाजेड़, बाड़मेर–मुंबई
- श्री हिन्दुमलजी–मटकोदेवी, पुत्र : पुखराजजी, सुरेशकुमारजी, भरतकुमारजी, नरेशकुमारजी बेटा–पोता : हमीरमलजी लुणिया परिवार धोरीमन्ना
- संघवी श्री कुशलराजजी, उत्तमचंदजी, ललितकुमारजी बेटा–पोता : रुखमणीदेवी, पृथ्वीराजजी गुलेच्छा, मोकलसर–बैंगलोर
- श्रीमती मोहनीदेवी समरथमलजी रांका, गोल–उम्मेदाबाद–चैन्नई
- श्री बाबुलालजी, मुलचंदजी, पवनकुमारजी सुपुत्र : श्री राणामलजी लालण (मांगतावाले) धोरीमन्ना हाल सिद्धपुर
- श्रीमती गजीदेवी सुरतानमलजी बोहरा–कोनरा–सांचोर
- श्रीमती मोहनीदेवी भूरचंदजी लूणिया, सुपुत्र : बाबुलालजी, भैरुचंदजी, नरपतकुमारजी लूणिया, धोरीमन्ना–अहमदाबाद
- श्रीमती कुसुमदेवी अनिलकुमारजी सुनिलकुमारजी चौरड़िया, अजिमगंज–कोलकात्ता

स्वर्ण स्तंभ

- राणुलालजी विजयकुमारजी गुलेच्छा, धमतरी

रजत स्तंभ

- श्रीमती कमलादेवी बाबुलालजी लूणिया परिवार, धोरीमन्ना–बाड़मेर
- श्रीमती पुष्पादेवी ए. जैन, पाली–मुंबई
- श्री गुरुभक्त परिवार

सभी की भावभरी अनुमोदना

अनुमोदकः– श्री जिनहरि विहार समिति पालीताना (गुजरात)

तीर्थंकर परिचय

24 तीर्थंकरों की अवगाहना कैसे याद रखना?

प्रथम प्रभुजी ऋषभदेव की अवगाहना 500 धनुष, अब 500 से शुरू,
फिर जब तक 100 न आये 50-50 कम करते जाए। यानी

1 तीर्थंकर - 500 धनुष
2 तीर्थंकर - 450 धनुष
3 तीर्थंकर - 400 धनुष
4 तीर्थंकर - 350 धनुष
5 तीर्थंकर - 300 धनुष
6 तीर्थंकर - 250 धनुष
7 तीर्थंकर - 200 धनुष
8 तीर्थंकर - 150 धनुष
9 तीर्थंकर - 100 धनुष

अब 50 तक 10 कम करते जाए

10 तीर्थंकर - 90 धनुष
11 तीर्थंकर - 80 धनुष
12 तीर्थंकर - 70 धनुष
13 तीर्थंकर - 60 धनुष
14 तीर्थंकर - 50 धनुष

अब? 10 धनुष तक 5- 5 कम करे

15 तीर्थंकर - 45 धनुष
16 तीर्थंकर - 40 धनुष
17 तीर्थंकर - 35 धनुष
18 तीर्थंकर - 30 धनुष
19 तीर्थंकर - 25 धनुष
20 तीर्थंकर - 20 धनुष
21 तीर्थंकर - 15 धनुष
22 तीर्थंकर - 10 धनुष

अब अंतिम दो तीर्थंकर की हाथ के परिमाण में याद रखना है-

23 तीर्थंकर - 9 हाथ
24 तीर्थंकर - 7 हाथ

श्री संतोषजी गुलेच्छा की यादें

एक खुशनुमा व्यक्तित्व

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

एकमात्र अपनी खुशी के लिये जीने वाले व्यक्तियों की दुनिया में कोई कमी नहीं है पर ऐसे व्यक्तित्व अत्यन्त विरल और दुर्लभ होते हैं जो अपनी खुशी के रंग से परिचय में आने वालों को भी खुशनुमा बना देते हैं। इस संदर्भ में इस समय मेरी आँखों के सामने तैर रहा है-श्री संतोषजी गुलेच्छा का सहज, नम्र और मधुर व्यक्तित्व।

सन् 2015 के रायपुर चातुर्मास में प्राप्त परिचय की धारा शनैः-शनैः प्रेम की सरिता में बदलती गई। इस चातुर्मास के बाद वे जब भी मिले, तब बहुत सालों का या सदियों का नहीं, अपितु जन्मों का परिचय है, ऐसा ही प्रतीत हुआ।

आज जब मैं श्री संतोषजी पर कुछ लिखना चाह रहा हूँ, तब सोच रहा हूँ कि उनके किस गुण की विशेष व्याख्या करूँ? अरे! उनमें केवल एक गुण होता तो लिखना सरल होता पर संतोषजी तो गुणों का मानो खजाना थे, वैसे ही जैसे सौन्दर्य, माधुर्य जैसे सैकड़ों गुणों का खजाना एक उपवन हुआ करता है।

उपवन में विविध रंगों के फूल खिलते हैं। गुलाब, चम्पा, चमेली, मालती, जूही..., उनका भी अलग-अलग रंग, रूप, गंध, सुन्दरता, मोहकता और मधुरता। जैसे फूल महज 10-20 घण्टे खिलता है, फिर मुरझाकर पंचतत्त्व में विलीन हो जाता है, फिर भी उसका जीवन सार्थक हो जाता है। वैसे ही फूल जैसे कोमल और फल जैसे सरस स्वभाव के धनी श्री संतोषजी गुलेच्छा का खिलना-मुस्कुराना-महक लूटाना महज 6-7 दशकों का ही था पर उन्होंने अपने अस्तित्व और व्यक्तित्व को सुयश की सुगंध और सदाचार के रंग से सार्थक कर लिया।

बहिरंग तौर पर मीठी बोली और सुन्दर कद-काठी वाले श्री संतोषजी जब भी मिलते, नम्रता और मधुरता के परिधान में सजे हुए ही मिलते। उनका वार्तालाप अहंकार और आवेश से लाखों कोसों दूर होता। सहज, मिलनसार, उदार और शांत स्वभावी श्री गुलेच्छा पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के प्रति अप्रतिम रूप से समर्पित और श्रद्धान्वित थे।

कोई ऐसा अर्थ न निकाले कि पूज्य गुरुदेवश्री से जुड़े होने के नाते यह आलेख लिखा जा रहा है। वस्तुतः उनकी मोहकता, मधुरता और सहजता इतनी ज्यादा घनत्व से परिपूर्ण थी कि सबको अपनी ओर आकर्षित करती। जो भी मिलता, वह उनके गुणों की प्रशंसा व आशंसा किये बिना नहीं रहता।

श्री संतोषजी ने श्रावक जीवन की गरिमा और महिमा को गहराई से समझा था। वे भले ही प्रतिदिन दो-चार सामायिक या नियमित प्रतिक्रमण नहीं करते थे पर उनकी चेतना में गुणों के प्रति जो अनुराग का भाव था, परिस्थितियों को समझने की जो भावनात्मक समझ थी, सकारात्मक सोच, आत्मविश्वास और परिश्रम का जो आत्मिक शृंगार था, वह उन्हें अच्छे-सच्चे श्रावक का अलंकरण दे जाता है।

श्री संतोषजी बुद्धिजीवी होने के साथ श्रद्धाजीवी भी थे। C.A की उच्चस्तरीय शिक्षा से प्रशिक्षित होने पर भी उनकी अन्तरात्मा अध्यात्म से प्रभावित थी।

वे जितने प्राज्ञ थे, उतने ही ऋजु भी थे। नवविध परिग्रह से सम्पन्न होने पर भी वे त्याग को श्रेष्ठतम सम्पत्ति मानते थे। खूबियों की खुश्बू से महकते संतोषजी समाज में माननीय होने के साथ-साथ शासन के क्षेत्र में भी उन्होंने मूल्यवान् अवदान दिये थे। वे पूज्य गुरुदेवश्री द्वारा संस्थापित अ.भा.श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ प्रतिनिधि महासभा के महामंत्री पद को शुरु से ही शोभित कर रहे थे।

आज रह-रहकर उनकी स्मृतियों से हृदय का कण-कण भावविभोर हो रहा है। सबने यह कब सोचा था कि वे इतनी जल्दी नये पडाव की ओर प्रस्थान कर जायेंगे। उनका आकस्मिक स्वर्गगमन शासन, समाज, संघ और परिवार के लिये अपूरणीय क्षति है।

परमात्मा वर्धमान स्वामी गणधर गौतम स्वामी और दादा गुरुदेव से प्रार्थना है कि वे महाविदेह में शीघ्रमेव संयम का वरदान प्राप्त कर चरम-परम अवस्था को प्राप्त करें।

पीड़ा और उदासी के इन क्षणों में वीतराग परमात्मा परिवारजनों को सहज धीरज और दिव्य शक्ति दें। परिवारजन श्री संतोषजी गुलेच्छा के आदर्शों को जीवन में अपनाते-महकाते हुए आगे बढते रहें, यह उनके प्रति हार्दिक भावांजलि होगी।

सूरिमंत्र साधना की पुर्णाहुति पर

केयुप द्वारा सामुहिक सामायिक साधना का देशभर में आयोजन

अखिल भारत 6 नवंबर। पूज्य खरतरगच्छाधिपति अवंति तीर्थोद्धारक आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा. एवं पूज्य ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक आचार्य श्री जिनमनोज्ञसूरीश्वरजी म.सा. के सूरिमंत्र साधना की प्रथम पीठिका के पूर्णाहुति निमित्त अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद केंद्रीय समिति के आव्हान 'केयुप की एक आवाज – सभी शाखाएं एक साथ' के अंतर्गत केयुप की देशभर में फैली विविध शाखाओं द्वारा इस दिवस को सामूहिक साधना दिवस के रूप में मनाते हुए सामूहिक सामायिक का आयोजन किया गया। इस आयोजन के अंतर्गत हजारों श्रावक श्राविकाओं ने सामायिक का लाभ लिया।

वर्तमान की कोरोना जनित विपरीत परिस्थितियों में भी सामूहिक सामायिक का आयोजन कर रही समस्त शाखाओं में बेंगलुरु, इचलकरंजी, रायपुर, दुर्ग, राजनांदगांव, चैन्नई, मुंबई, ब्यावर, दोंडाईचा, डीसा, बाड़मेर, जोधपुर, अहमदाबाद, दिल्ली, चूलै-चैन्नई, अयनावरम-चैन्नई, धोबी पेट-चैन्नई, श्री धर्मनाथ मंदिर-चैन्नई, सूरत शाखा-1, कोट्टूर, अक्कलकुआ, इंदौर, नीमच आदि समस्त शाखाओं का योगदान अनुमोदनीय रहा।

जिन स्थानों पर शासन के प्रतिबंधों के कारण सामूहिक आयोजन संभव नहीं था वहां गुरुदेव के प्रति समर्पित हजारों भक्तों द्वारा अपने घरों पर ही सपरिवार इष्ट मित्रों सहित सामायिक कर पूज्य गुरुदेव के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट की। सामायिक में नवकार जाप, वर्धमान शक्रस्तव, भक्तामर, गुरु गौतम प्रार्थना, दादा गुरुदेव इकतीसा पाठ आदि किया गया।

सभी ने गुरुदेवों के प्रति गुरुभक्ति प्रकट करते हुए गुरुदेव को उत्तम आरोग्य, दीर्घ निष्कंटक संयम जीवन, एवं सूरि-मंत्र साधना के प्रभाव से जिनशासन एवं खरतरगच्छ की प्रभावना करते रहे ऐसी परमात्मा से प्रार्थना की।

-धनपत कानुंगो, राष्ट्रीय चेयरमेन (प्रचार प्रसार) केयुप केन्द्रीय समिति

श्री संतोषचंदजी गुलेच्छा

मूल फलोदी वर्तमान रायपुर निवासी श्रावक प्रवर श्री संतोषचंदजी गुलेच्छा सी.ए. का ता. 1 दिसम्बर 2020 को स्वर्गवास हो गया। श्री गुलेचछाजी समाज व गच्छ के आगेवान श्रावक थे।

अखिल भारतीय जैन श्वे. खरतरगच्छ प्रतिनिधि महासभा के वे पहले महामंत्री रहे। वर्तमान में वे महासभा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष के पद पर कार्यरत थे। पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. ने कहा- श्री गुलेच्छाजी समाज के दिव्य स्तंभ थे। वे शांत प्रकृति के प्रज्ञा संपन्न समर्पित सुश्रावक थे। उनके स्वर्गवास से गच्छ व संघ की बड़ी क्षति हुई है।

जहाज मंदिर परिवार हार्दिक संवेदना के साथ श्रद्धांजलि अर्पण करता है।

ज्ञानसूर्य डॉ. सागरमलजी जैन को श्रद्धांजलि

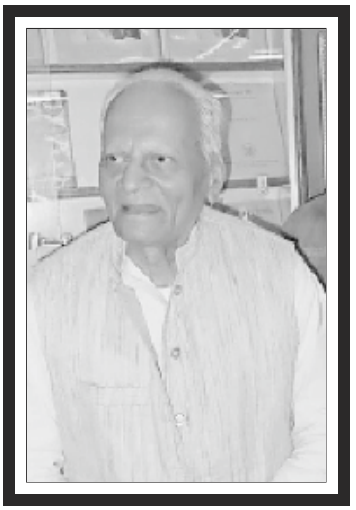

शाजापुर 2 दिसंबर। साहित्य सिखाकर डॉक्टरेट की डिग्री दिलवाने वाले जैन दार्शनिक, चिंतक, लेखक एवं शाजापुर स्थित प्राच्य विद्यापीठ शोध संस्थान के निदेशक डॉ. सागरमल जैन का दिनांक 2 दिसंबर को शाम 6:30 बजे संथारापूर्वक स्वर्गवास हो गया। 30 नवंबर की शाम 5 बजे वे नई सड़क स्थित मकान में संथारा लिया था। इससे पूर्व 6 साल पहले डॉ. जैन की पत्नी श्रीमती कमलाजी जैन ने भी संथारा लेकर ही देह त्यागी थी। डॉ. जैन के बेटे पीयूष जैन ने बताया कि पिताजी ने खुद आगे रहकर अपनी इच्छा से संथारा लिया। संथारे के दौरान उनकी शाता पूछने व दर्शन करने अनेक गांवों के लोग पहुंचे।

डॉ. जैन ने जैन धर्म को देश के अलावा विदेशों तक भी पहुंचाने का काम भी किया है। डॉ. जैन ने शिकागो, राले, ह्यूस्टन, न्यूजर्सी, उत्तरी कैरोलिना, वाशिंगटन, लॉस एंजिल्स, फिनीक्स, सेंट लुईस, पिट्सबर्ग, टोरंटो, न्यूयार्क, कनाडा, लंदन आदि जगह जैन धर्म पर व्याख्यान दिए। साथ ही लंदन विश्वविद्यालय में जैन योग पर व्याख्यान दिया।

२०१८ में मिला राष्ट्रपति पुरस्कार- जैन दार्शनिक, चिंतक, लेखक डॉ. सागरमल जैन को दुर्लभ प्राकृत भाषा और साहित्य में उत्कृष्ट योगदान पर दो साल पहले 2018 में राष्ट्रपति पुरस्कार के लिए चुना गया। बाद में 4 अप्रैल 2019 को उन्हें उप राष्ट्रपति वैंकेया नायडू ने इस पुरस्कार ने नवाजा। दिल्ली की अशोका होटल में अलंकरण समारोह कार्यक्रम के दौरान 5 लाख रुपए का चेक एवं अभिनंदन पत्र भेंट कर सम्मानित किया।

हिंदी, अंग्रेजी व प्राकृत भाषा में ६७ पुस्तकें लिखी- 1964 से 1989 तक शासकीय सेवा व दर्शन शास्त्र में इंदौर, ग्वालियर, भोपाल में पढ़ाया। इसके बाद 1979 से पार्श्वनाथ विद्यापीठ वाराणसी में डॉ. जैन ने 18 साल तक सेवाएं दी। 1998 से शाजापुर में प्राच्य विद्यापीठ की स्थापना कर यहां शिक्षण शुरू कराया। इस दौरान अब तक उन्होंने हिंदी, इंग्लिश और प्राकृत भाषा में 67 पुस्तकें लिखी। करीब 40 साल के अंतराल में 59 लोगों को जैन, बौद्ध व हिंदू धर्म पर पीएचडी कराई। डॉ. जैन ने हमीदिया कॉलेज में रहते हुए मुख्यमंत्री शिवराजसिंह चौहान को भी पढ़ाया है। कुछ साल पहले शाजापुर आगमन पर शिवराजसिंह चौहान ने खुले मंच से यह बात कही थी। उस समय उन्होंने डॉ. जैन को सम्मानित भी किया था।

शासकीय सेवा से जुड़े- 1964 से शासकीय सेवा से जुड़े डॉ. जैन ने 2020 तक कुल 300 जैन साधु-साध्वियों को अध्यापन कराया। डॉ. जैन के सान्निध्य में रहकर 42 जैन संतों ने शिक्षा ली।

डॉ. सागरमल जी ने धर्म शास्त्रों की इस बात चरितार्थ कर दिया है कि शरीर नौका है, आत्मा नाविक है, संसार सागर है, जिसे महर्षिजन प्रज्ञा की पतवारों के सहारे पार कर जाते हैं। हम डॉ. साहब की विदेह यात्रा में उनकी भव मुक्ति की प्रार्थना करते हैं। वे आत्म-रमण करते हुए जितेंद्रिय पद को प्राप्त हों। आदरणीय डॉ. साहब ने अपने विराट ज्ञान से अनगिनत विद्यार्थियों को लाभान्वित किया है। विशेष रूप से सैकड़ों साधु-साध्वीजी को ज्ञानी एवं आगमविद् बनाकर आपने जिन शासन पर बड़ा उपकार किया है। वे जिन शासन में सदा जयवंत रहेंगे।

सादर श्रद्धांजलि

श्री अमितकुमारजी छाजेड, सांचोर

सांचोर मुंबई निवासी श्री अमितकुमार मनोहरजी छाजेड़ का 14 अगस्त 2020 को 42 साल की उम्र में स्वर्गवास हो गया। वे कैंसर की बीमारी से ग्रस्त थे। समता से वेदना सहन करते-करते वर्षों तक सहनशील बने रहे।

गौ सेवा में ज्यादा रूचि रखते थे। बोम्बे गौशाला में प्रतिदिन धर्मपत्नी सीमा के साथ जाते थे, श्वास निकलने से घंटाभर पहले भी अपनी पत्नी व भाई सतीस को गौशाला दान पुण्य करने के लिये भेजा।

पू. बहिन म. डॉ. साध्वी विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या साध्वी श्री नीतिप्रज्ञाश्रीजी महाराज के आप सांसारिक जीजाजी थे। जहाज मंदिर परिवार की ओर से सादर श्रद्धांजलि समर्पित है।

श्री अनिल जी श्रीमाल, जयपुर

श्री अनिल जी श्रीमाल का आकस्मिक स्वर्गवास जयपुर में हो गया।

बहुत मिलनसार एवं सदैव प्रसन्न रहने वाले व्यक्ति थे। जिनशासन के कार्यों में सदैव अग्रणी श्रीमालजी दादा गुरुदेव के अनन्य भक्त थे और दादा गुरुदेव की भक्ति बहुत ही भावपूर्ण भजनों के माध्यम से उत्साहपूर्वक किया करते थे। परमात्मा से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को उच्च गति प्राप्त हो एवं परिवार जनों एवं इष्टमित्रों को दु:ख सहन करने की शक्ति मिले।

जहाज मंदिर परिवार की ओर से सादर श्रद्धांजलि समर्पित है।

श्री अशोकचंद जी बोहरा, अक्कलकुवा

वाण्याविहीर । सुश्रावकवर्य श्री अशोकचंदजी बोहरा (अक्कलकुवा) का 68 वर्ष की आयु में दिनांक 9 नवंबर 2020 को निधन हो गया।

परिवार में धार्मिक भावनाओं के विस्तार में आपका महत्वपूर्ण योगदान रहा। जिसके फलस्वरूप आपके परिवार से अनेक दीक्षाएं संपन्न हुई है। जहाज मंदिर परिवार की ओर से सादर श्रद्धांजलि समर्पित है।

श्री मोहनलालजी छाजेड, चौहटन

जैन श्री संघ चौहटन के ट्रस्टी आदरणीय श्री मोहनलाल जी छाजेड़ का आकस्मिक स्वर्गवास हो गया। परमात्मा दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करें एवं परिजनों को इस वज्रपात को सहन करने की शक्ति प्रदान करावें। चौहटन क्षेत्र में मोहन हेमानी के नाम से वर्षों से आप विख्यात रहे है।

जहाज मंदिर परिवार की ओर से सादर श्रद्धांजलि समर्पित है।

श्री पूनमारामजी प्रजापत का स्वर्गवास

गोडा 6 नवंबर। पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की सेवा में पिछले 32 वर्षों से सेवारत परम सेवाभावी मुकेशकुमार प्रजापत के पिताजी श्री पूनमाराजजी का 100 वर्ष की उम्र में स्वर्गवास हो गया।

वे शतायु संपन्न होने पर भी पूर्ण रूप से स्वस्थ थे। वे पिछले तीन दिनों से ही थोडे अस्वस्थ थे। वे प्रतिदिन भगवान के नाम की माला का जाप करते थे। माला सदा उनके हाथ में रहती थी। वे पूर्ण रूप से धार्मिक व्यक्ति थे। जहाज मंदिर परिवार दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धांजली अर्पण करता है।

श्री विनोद डागा, बैतूल

बैतूल। मध्यप्रदेश के बैतूल के पूर्व विधायक और दादा गुरुदेव के भक्त श्री विनोदजी डागा की धनतेरस पर पूजा करते हुए स्वर्गवास हो गया। श्री डागा जैन दादावाड़ी स्थित मंदिर में पूजा करने गए थे। पहले उन्होंने मंदिर में भगवान पार्श्वनाथ की पूजा की। इसके बाद दादा गुरुदेव मंदिर की परिक्रमा लगाई और पूजा शुरू की। जैसे ही उन्होंने मत्था टेका। इसके तुरंत बाद वह गश खाकर गिर गए।

श्री डागा के आसामयिक निधन को एक राजनैतिक क्षति के रूप में देखा जा रहा है। क्योंकि अपने सफल राजनैतिक जीवन में उनका लोगों से हमेशा जीवंत संपर्क रहा। इस व्यक्तित्व में ये खासियत थी कि वे कितने भी व्यस्त हो आम लोगों के सुख दुख में वे सबसे सामने खड़े होकर अपनी जिम्मेदारी निभाते थे। ऐसे सफल, जिम्मेदार, गंभीर, मिलनसार व्यक्तित्व को शत-शत नमन है।

जहाज मंदिर परिवार की ओर से सादर श्रद्धांजलि समर्पित है।

(शेष पृष्ठ 10 का)

ऐसे थे मेरे गुरुदेव

तो साथ ही कुछ लोगों की द्वेष बुद्धि की परिणति भी साक्षात् देखी थी।

तब परमात्मा की वाणी हमारे मन मस्तिष्क में उभरी थी कि साधु अनुकूलता और प्रतिकूलता दोनों ही प्रकार की परिस्थितियों में समभाव रखे।

उस साम्ययोग की स्थिरता की साधना से ही हम स्थिर रह सके। हाँलाकि यह परिस्थिति लम्बे समय तक नहीं चली। आखिर असत्य के पाँव होते ही कहाँ है, जो टिक सके।

यह संवाद सुनकर हमारा मन कांप उठा था। उस संवाद का विवरण सुनने के लिये मन तत्पर हो उठा था। पूज्यश्री ने उस काल खण्ड में प्रवेश कर धीरज के साथ विस्तार से उस घटना को सुनाया था।

क्रमशः

(शेष पृष्ठ 17 का)

श्रीमती प्रेमलताजी डोसी

डोसीजी ने कहा- डॉक्टर के यहाँ चलते हैं। तुरंत पुत्रों को एवं पुत्री को सूचना दी गई। सभी सीधे हॉस्पीटल पहुंचे। उस समय तक प्रेमलताजी इतने स्वस्थ थे कि गाड़ी में स्वयं चलकर बैठे और उतरे भी तो चलकर।

प्रेमलताजी को हॉस्पिटल में लिटाया गया। सर्वप्रथम डॉक्टर ने एकाध प्रश्न करके ईसीजी निकाला, ज्योंहि ईसीजी की रिपोर्ट डॉक्टर ने देखी, देखते ही वह हिल गया। और देखते-देखते प्रेमलता जी ने पूरे परिवार के सामने नवकार मंत्र सुनते-सुनते सदा-सदा के लिए आँखें मूंद ली। साइलेंट अटैक ने जैसे पूरे परिवार की नींव ही हिला दी। सहिष्णु प्रेमलताजी को एक नहीं एक करोड़ उपालंभ देने की इच्छा होती है कि आपने ऐसा क्यों किया? क्यों नहीं बताया कि दर्द हो रहा है पर संभवतः डोसीजी के जीवन में वियोग की रेखाएं तय हो गई थी। परिवार के पुण्य में कहीं न्यूनता आ गयी थी।

प्रेमलताजी की विदायी की सूचना ज्योंहि हमें मिली स्वतः आँखें भर आयी। शास्त्रों में श्राविका को माँ की उपमा दी गई है। प्रेमलताजी उसका साकार रूप है। उनकी संघवत्सल पापभीरु आत्मा को भावभरी श्रद्धांजली एवं वे अतिशीघ्र मोक्षगति को प्राप्त करे। उनकी आत्मा जहाँ भी हो, गिरनार तीर्थ की योजना को शीघ्रातिशीघ्र सम्पन्न कराने में सहयोग प्रदान करें।

जटाशंकर

आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

जटाशंकर बाजार में चल रहा था। वहीं एक जेबकतरा अपने शिकार की तलाश में घूम रहा था। उसने जटाशंकर को अपनी जेब में हाथ डालते हुए देखा। उसने देखा कि जटाशंकर ने पॉकिट बाहर निकाला। कुछ काम के कागज देख कर वापस उसे जेब में डाला।

जेबकतरे की नजरें उसका पीछा कर रही थी। उसने देख लिया था कि पॉकिट रुपयों से भरा है। वह पॉकिट उडाने की ताक में उसके पीछे-पीछे चलने लगा।

कुछ ही देर बाद उसे मौका मिल गया। भीडभाड भरे इलाके में धीरे से उसने पॉकिट उडाया और भागने लगा।

पॉकिट उडाने के क्षणों में जटाशंकर ने उस व्यक्ति को देख लिया था। जब तक वह चिल्ला पाता और उस जेबकतरे का हाथ पकड पाता, तब तक वह दौड चुका था।

जटाशंकर भी दौडने में कमजोर नहीं था। वह दौड प्रतियोगिता में चेम्पियन रह चुका था। उसने जेबकतरे के पीछे तेजी से दौड लगाई।

जेबकतरा आगे... जटाशंकर पीछे...।

जटाशंकर ने दौड की गति को और ज्यादा तेज किया। परिणाम यह हुआ कि कुछ ही देर बाद जटाशंकर आगे और जेबकतरा पीछे हो गया।

जटाशंकर दौड में इतना मशगूल हो गया कि वह भूल ही गया कि मैं अपना पॉकिट पाने के लिये जेबकतरे को पकडने के लिये दौड रहा हूँ।

उसके दिमाग में तो दौड प्रतियोगिता को जीतने का संकल्प ही हिलोरें ले रहा था।

उसे लगा कि दौड में मैं जीत गया। प्रतिस्पर्धी को मैंने बहुत पीछे छोड दिया।

तभी उसे ख्याल आया कि मैं तो जेबकतरे को पकडने के लिये उसके पीछे दौड रहा था।

उसने मुडकर पीछे देखा... जेबकतरा कहीं पर भी नजर नहीं आया। वह पीछे से कब खिसक गया, जटाशंकर को पता भी नहीं चला।

उसकी दौड बेकार हुई। उसने अपना माथा पीट लिया।

हम भी निरन्तर जन्म मरण की दौड लगा रहे हैं। मगर यह भूल गये कि इस दौड का उद्देश्य क्या था! मैंने दौड का प्रारंभ किसलिये किया था। मैं दौड भरा जीवन जी रहा हूँ जन्मों जन्मों से! पर पा कुछ भी नहीं रहा हूँ। क्योंकि लक्ष्य और मंजिल को ही भूल रहा हूँ। दौडना मुख्य नहीं है। मुख्य है पाना। अपना लक्ष्य निश्चित करो। फिर लक्ष्य की दिशा में दौड लगाओ। प्राप्ति का आनंद रोम-रोम से प्रकट होगा।

जहाज मंदिर में संपन्न सूरि मंत्र के विविध विधान

श्री गुलाबचंदजी लूणिया शेरगढ़ द्वारा गुरूपूजन

श्री मांगीलालजी मालू मालेगांव द्वारा पुस्तक विमोचन

RNI : RAJHIN/2004/12270
Postal Registration no. RJ/SRO/9625/2018-2020 Date of Posting 7th

जहाज मंदिर में संपन्न सूरि मंत्र मांगलिक समारोह

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट,
जहाज मन्दिर, माण्डवला - 343042, जिला - जालोर (राजस्थान)
फोन : 02973-256107 / 256192 फैक्स : 02973-256040, 09649640451
e-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www. jahajmandir.com

श्री जिनकांतिसागर सूरि स्मारक ट्रस्ट, माण्डवला के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. चू. सी. जैन द्वारा महालक्ष्मी कम्प्यूटर सर्विस पुरा मोहल्ला, खिरणी रोड, जालोर से मुद्रित एवं जहाज मन्दिर, मांडवला, जि. जालोर (राज.) से प्रकाशित।
सम्पादक - डॉ. चू. सी. जैन
www.jahajmandir.org
शब्दांकन : धर्मेन्द्र बोहरा, जोधपुर-98290 22408